

पृ० ॥ ३६॥

१५४ नवरोमवयमेकामविधि

नमो भगवते

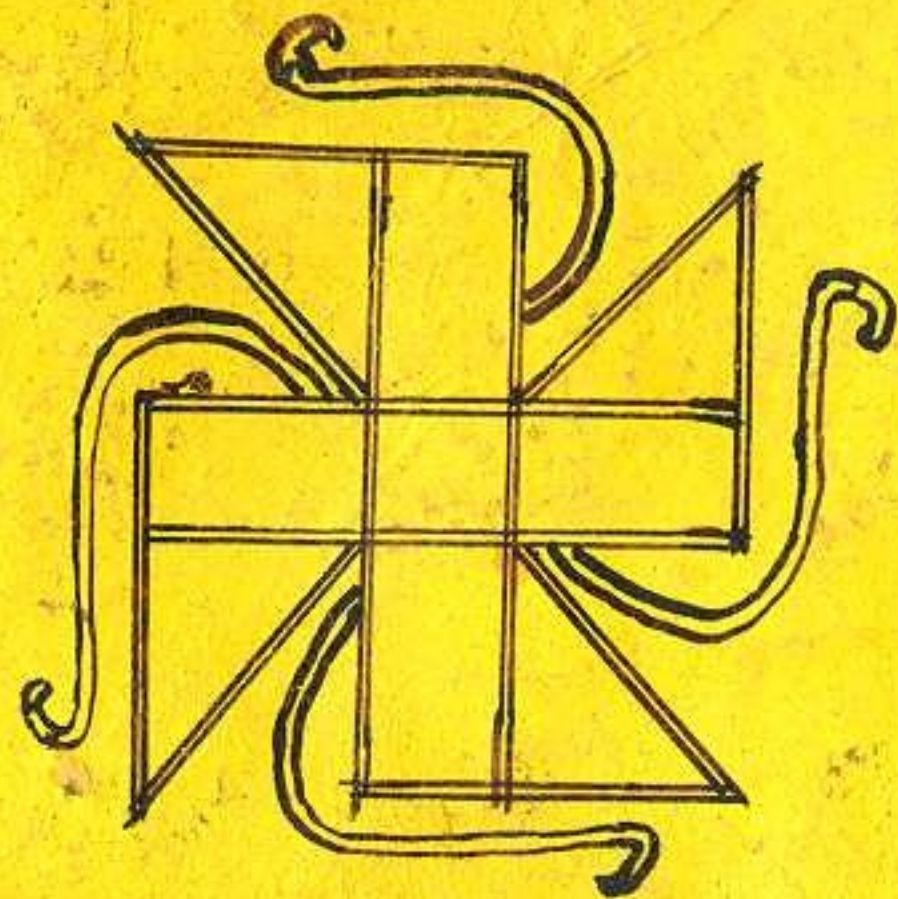
ASHA ARCHIVES

3555





स्वस्तिध



सनकाली

कलश

निव

शक्ति

कूरु

थलुल

पारु

भाहनी



कोमात्री

नवयशिका

गलथानि

खड्ग



ववव
न पाञ्च

कखनम

उद्ध रूद्र

यागिनी नूनि

जयाशू

ॐ नमः

अकर्षलीनं

विजयाकं

अश्वारूढ

अश्वारूढ

ॐ नमः

जा
किलि

गल

मारु नीयं

सिचलुन

हो
किला

व

का

किला

उद्ध

अश्वि

यम

दाश

गार्वं

नेमहा
अध

अपगाट

वने

वने

किं

अ

अ

किं

किं

वेव

अपगाट

प

वउक

वापवा

कवन

अपगाट

अपगाट

अपगाट

मा

[illegible]

ह्यनमः॥ ~~मूर्तुं उग्रवधुमनामिकानमः॥~~ नियममर्दनीमधुमायनमः॥ ~~हूर्तुं रुसदानः~~
~~क२ तर्कन्या~~ यनमः॥ ~~त्वां मां शंसं~~ अगुष्टायनमः॥ मृत्पूरुनकनतनायनमः॥ ~~हूर्तुं~~
क्रीं नाजयददयायनमः॥ ~~मूर्तुं उग्रवधुसिबसत्वाला~~ नियममर्दनतिखायवोषट्॥
~~हूर्तुं रुसदानक२ कवचायद~~॥ ~~त्वां मां सें~~ नगुष्टयायवषट्॥ मृत्पूरुनमृत्पायरुद
॥ जल, नृघ, रुगुष्टि, आत्मपूजा॥ ~~यं च वलि~~॥ अमयूनास्त्रायनमः॥ अदवीपूठवट्
कनाथ, कपिनजता, रात्ररागूत्रजिनशाक्षा नामखमृवतन२ गुरुहिरुगवनमधुलम
(अक्षय) (पनिगानां वलि) टक२ वाविगार्थददस्वमदु३ रुदत्वाला॥ अननास्त्रायन

[illegible]

॥ गौं गिरुं गेयुं गं कन ग (ल) श्व नाय नमः ॥ आ वा रु ना दि ॥ दधु ग ऊ नी या नि वि द्ग
ऊ म् द्रा य द र्श य त् ॥ ऊ य स्ता य ॥ गे र्था पू र्ण क्मा र्ण ग ग ल नि रु त न र्द य र्थ या ग नि श्व
वा म् धु व धु वृ पा द्वि त दि प ति मूर्ख वि प्रि ला र्ण ग (ल) श्व पू र्था या धू य दी या मि ष म धू व
रु रि ४ सा र्ध या र्ध या मि व क् स र्पू जि ता ना वि घ्न द्नि त रु र्ण रु कि म् कि द दा रु ४ ॥ अ
र्ग य दि ॥ धी र्म व रु न आ वा रु न ॥ न ना स्ना य पा द्का ॥ म यु ना स्ना य पा द्का ॥ म सा स्ना
य पा द्का ॥ कौ र्दि र्द य पा ना य पा द्का ॥ धी र्म व रु क ना थ य पा द्का ॥ ग र्ग नि गु ग क ल
ग (ल) श्व ना य पा द्का ॥ आ स न त य ॥ आ धा व ण क य पा द्का ॥ अ न ना स ना य पा द्का

॥ अकन्दसनायपादुकी ॥ अनलासनायपादुकी ॥ अयशासनायपादुकी ॥ अकं
नायपादुकी ॥ अकलिकासनायपादुकी ॥ अयशासनायपादुकी ॥ अनेंकीं श्री
मधुनायनमः ॥ अकर्मनायनमः ॥ असिंहायनमः ॥ अधर्मायनमः ॥ अज्ञनायन
मः ॥ अवेनायनमः ॥ अनेध्यायनमः ॥ अमृधर्मायनमः ॥ अज्ञनायनमः ॥ अमृवेना
नायनमः ॥ अमृनेध्यायनमः ॥ अनेंकीं सवत्कालिदूर्गारुथमुखाका ॥ अने
या अशलि ॥ अनेंकीं यजुः ॥ यानिमूडाप्रदर्शयत् ॥ अनेंकीं दक्षयक्षविनाशिनेमहा
धाराययानिनि काटियनिवृत्तायेकीं सवत्कालीदूर्गारुदालिकाये ॥ अनेंकीं आचर्मन

वायु स्नान चंदन पृथु नेवर्धनमः॥ शिष्टादि सर्वमद्रोष दर्शयत्॥ यन्निवानसु
जा॥ हुं क्रौं श्रुं सिं गारुं रे नवायनमः॥ हुं क्रौं नू नू रे नवायनमः॥ हुं क्रौं वलुं रे नवायन
मः॥ हुं क्रौं कां धरुं रे नवायनमः॥ हुं क्रौं उ न्म रुं रे नवायनमः॥ हुं क्रौं कपाली सरुं रे नवा
यनमः॥ हुं क्रौं री व न रुं रे नवायनमः॥ हुं क्रौं ही ला न रुं रे नवायनमः॥ नू ति नू ति गी ता
मा नि॥ हुं क्रौं श्रुं वक्रां न्ये नमः॥ हुं क्रौं की मा रुं ध्ये नमः॥ हुं क्रौं चं को मा नी नमः॥ हुं
क्रौं टं वे प्रु वी नमः॥ हुं क्रौं तं वा ना ही नमः॥ हुं क्रौं पं नू द्रा सी नमः॥ हुं क्रौं यं चा म ध्रु ये
नमः॥ हुं क्रौं हं म रु ल क्षी नमः॥ नू ति वक्रां स्थ दि॥ हुं क्रौं ऊ या द वी नमः॥ श्री वि ऊ या

दवीनम॥ श्री अजितादवीनम॥ श्री अयनाजितादवीनम॥ श्री अरुनीदवीनम॥
श्री कुरुनीदवीनम॥ श्री मारुनीदवीनम॥ श्री आकर्षणीदवीनम॥ श्री जयादि॥ ॥
श्री श्री नृपचक्षुदवीनम॥ श्री श्री यचक्षुदवीनम॥ उडुं चक्षुपादवीनम॥ श्री श्री चक्षु
नायिकादवीनम॥ श्री श्री चक्षुदवीनम॥ श्री श्री चक्षुवतीदवीनम॥ श्री श्री चक्षुनृपाद
वीनम॥ श्री श्री ४ श्री चक्षुकादवीनम॥ उपचक्षुदि॥ ॥ श्री श्री चक्षुजलि॥ श्री श्री
श्री श्री चक्षुलायवलिगृह्णस्वाहा॥ श्री श्री कृष्णवदूकनाथयवलिगृह्ण
स्वाहा॥ श्री श्री गङ्गाकृष्णयवलिगृह्णस्वाहा॥ श्री श्री महाकनवीनम॥ श्री श्री

विषयतयवलिगृह २ स्वाहा ॥ श्रीं श्रीं सिद्धि वाम पुः श्रीं श्रीं वली गृह २ स्वाहा ॥ सर्वस्था
रुतस्था सर्वस्था पिः म चस्था सर्वस्था नृ दवतस्था वलिगृह २ स्वाहा ॥ ५ समस्त म
स्तुयी ॥ सिंहासनपीथि कृत्राय कृत्र सदा कृत्र सदा कृत्रादिद्यसिद्धिसमयचक्रपादकी ॥
धूप दीप जाप ॥ तर्पण ॥ समय द्वाया ॥ पितृ त्रयाया ॥ धन क्रिथं माला ॥ वलि (थय
क्रिथं वाया ॥ वल क्रिम तं विय ॥ धन नित्य पूजा विधिसमापक ॥ ॥ ॥
१० नाम कार्मुमी खड्ग पन विधि ॥ चक्र उद्घात ॥ मूर्ध्नि पाश धावत यावत् पुन
नमस्कारं ॥ नमः ॥ उत्तर पाश मूर्ध्नि पाश पूजा रुत पुष्टि आत्म पूजा ॥ चरु पुम सिं

इत्रतयाव॥ वक्रवाय॥ शिवशक्ति कुरुथेन॥ धृतधूनदाव॥ वलिमालकासम
संवाय॥ कलस॥ क्रसकन॥ सिंधुमूढ॥ मानकाधूनदाव॥ खड्गस्नानयाय॥ निम
कुनादि॥ कापलासदीवकाव॥ ऊमाननजानकाव॥ स्नानलखपंचामृतश्र
लिस्नानसपादनवायलखनसवरिनक॥ चन्दनादि॥ मूलकाव॥ वलस
रूपनयाय॥ खड्गस्यंगीद्राधनाय॥ सर्वशक्त्ययंकनि॥ प्रसभ्नास्मिऊयंदवी
खड्गसिद्धीनमाशुत॥ खालस्वना॥ मूलनस्त्रीवलात्त॥ मृगादि॥ ह्रथवाकन
॥ लुंजोद॥ गर्गमहाइर्गियावच्चन्दास्थिनारुवगुस्वाहा॥ धृतस्वपनविधि॥

॥ ॥ ~~तत्ताकमननरमीसीगायाइयवार्चनं कृत्वा~~ ॥ ऊऊमानपृथराऊन ॥ ह
र्याधि ॥ ~~एननमकान~~ ॥ अखलुमलुलाकान ह्यादि ॥ ~~न्यास~~ ॥ मृत्वरुत्रमृत्ताय रु
द्र ॥ ~~कुं~~ कुं नाऊप्रदकनीष्टा नम ॥ ~~घुं~~ उग्र वलुनामिकानम ॥ विष्मर्दनीम
धमायनम ॥ ~~ह्रूं~~ ह्रूं सदा नक्षत्रं नक्षत्रं न्यायनम ॥ ~~त्वां~~ मां ह्रूं स ४ अगुष्टायनम ॥
मृत्वरुत्रकनननायनम ॥ ~~कुं~~ कुं नाऊप्रदददयायनम ॥ ~~मृं~~ उग्र वलुसिनः
सखाहा ॥ ~~विष्मर्दनी~~ विष्मर्दनी विष्मर्दनी ॥ ~~ह्रूं~~ ह्रूं सदा नक्षत्रं कवचा यज्ञ ॥ ~~त्वां~~ मां
ह्रूं स ४ नक्षत्राय वषट् ॥ मृत्वरुत्रमृत्ताय रुद्र ॥ ~~अतवसपठंगनास~~ ॥ ॥

[illegible]

पादकां कुं धी सिद्धि वा म ध्याय पादकां ॥ वसिष्ठ ऋश्वाहा ॥ मूला स्त्राय पाः
दकां ॥ गं गौ पुंग कल ग (ह) व नाय पादकां ॥ वसिष्ठ ऋश्वाहा ॥ आ वा रु
नादि ॥ दधु न ऊ नी या नि वि न्दु ग ऊ म डी ष द र्श यत् ॥ कां स्वाहा ॥ १० ॥ धीं जीं स्वा
हा ॥ १० ॥ यां स्वाहा ॥ १० ॥ कुं स्वाहा ॥ पुं नं स्वाहा ॥ १० ॥ इति ॥ एते र्या पृथक् र्या विना ॥
श्रु गं धादि ॥ साधनं कृत्वा ॥ धी स म्ब र्क न आ वा रु न ॥ वि द वा ॥ ग गा क ल ण
पूजा ॥ ॥ ॥ आ ध न ण क न म ॥ अ न का म्ना य न म ॥ कं या स ना य न म ॥ ना
ना म्ना य न म ॥ ध ना स्त्राय न म ॥ कं ण ना स्त्राय न म ॥ कं ण ना स्त्राय न म ॥

॥ कर्त्तिकालाय नमः ॥ यज्ञत्राय नमः ॥ वृषाम्नाय पादुकी ॥ ध्यान ॥ शुद्धसू-
तिकर्षी काशी, यिनर्जुन वृद्धमोलिनी । वनदारुयहसुर्व, मद्रामालाधनरुनी । च
वैष्णवामहादेव ॥ ४ ॥ कर्माथसिद्धय ॥ नृत्तियानपूर्य नमः ॥ पूजन ॥
वृष्णाक्षानमः ॥ तुं विष्णुवनमः ॥ तुं नृदाय नमः ॥ तुं वृषीश्वराय नमः ॥ तुं
सदातिवाय नमः ॥ तुं गीताय नमः ॥ तुं उम्नाय नमः ॥ तुं नर्मदाय नमः
॥ तुं सनखत्ये नमः ॥ तुं गङ्गुकी नमः ॥ तुं गङ्गावलिनमः ॥ तुं सफसाग
नर्या नमः ॥ तुं संपूर्णकलसाय नमः ॥ हंतसंत पादुकी ॥ गियाऊर्ति ॥

कुं शं स नृ स्यं जया य नृ मृतं च वा य म हारं न वा य नृ मृतं लब्ध्वा किं स हि
 ना य संपूर्ण कलङ्गा य नमः ॥ ३ ॥ षष्ठं ग वलि ॥ जाय ॥ कुं शं स ४ स्वाहा १० ॥ का
 य ॥ नत्तोषधी सकल तीर्थ जन तपू धु स्व कुरु पञ्चा रिता पृथ्य माता यः षष्ठा
 ऋ विषया मुनि लिः प्रका त्वां कुरु मूर्ति निवहा किं यू कं कुरु मूर्ति न मा मि ॥ अ
 र्गं धादि ॥ नृ ति कलङ्गा पूजा ॥ ॥ अथ निवहा किं पूजा ॥ आ धन सकल स्यः
 ह्यादि ॥ ध्यान ॥ विश्व स्य माता पिता नो सद व द्गर्भं व मा ता पति मूर्ति नृ ता ॥
 इष्टं विदा तो निवहा किं नृ पो ध्या य नृ द हं मङ्गल कालि मा ते ॥ नृ ति ध्यान पृथ्य

नमः॥ वृजना॥ मृगिनामादि॥ वृज्जास्थ्यादि॥ श्रियाभ्रुलि॥ विडाहं तं मं तं ति
वडाकि मूरुय नमः॥ ३॥ वलिगटक्र २ स्वाहा॥ जाप को स्वाहा॥ १॥ काया॥ न
नाषधीत्यादि॥ ततासक्रमीदिन॥ नवयथिका पूजा॥ हुं जां भ्रं वृज्जालीन
म॥ कं न क वलुकाये नमः॥ वं ल द्यो नमः॥ दूं दं ग्नय नमः॥ तं वा मृधुय नमः
४॥ यं पठिकाये नमः॥ यं लिवाये नमः॥ हां हं क रु नि र्धु नमः॥ कां कार्लिके
नमः॥ त्रे श नवयथिका दुर्गन्थये पाइकी पूजयामि नमः॥ ३॥ वलिगटक्र २ स्वा
हा॥ जाप॥ मृगि॥ मरिषमि मरुमाय॥ वाम॥ सुम॥ सुमालिनी॥ श्रायनाश

मथमेऽथर्यदहिदवीनमास्तुत॥ ~~अर्गभदि॥~~ ~~भूतिनवयजिकापूजा॥~~ ॥
अथकुरुपूजा॥ न्यासा॥ वंअगुष्टास्यानमः॥ वंअजायरुद्र॥ वंता॥ इनीस्या
नमः॥ वंमथमास्यानमः॥ वंअनामिकास्यानमः॥ वंकनिष्टास्यानमः॥ वं
कप्रतलकनपृष्टास्यानमः॥ ~~वंहृदयायनमः॥~~ वंसिनास्रस्वाहा॥ वंनिखाय
वोषट्॥ ~~वंकवयायद्रो॥~~ वैनश्रुयायवोषट्॥ वंअजायरुद्र॥ भूतिकलष
उपन्यास॥ अथमकदि॥ सिंहास्रायपादुकी॥ वंकात्रास्रायपादुकी॥ ~~अ~~
~~ना॥~~ सनास्रमथपानदीनाद्याद्यानवपूज॥ तनात्यन्तमिहादवीदिव्यक

न्यामना नमः॥ नाक्षानस निरा दवि पद्मनाग समप्रणा॥ मृष्टादहा रुजाय
का, नत्तान्नका नरुषिता॥ सोम्य नृपिधना दवी, शिन्नजनवयो वना॥ खड्ग
शिल्पलवङ्गधर, उल्लिखितममृद्गनरुथ॥ गदापद्मवर्णपाशं, दक्षिणविना
जिगा॥ रुटकाङ्कशायनव, मधुखट्वाङ्गकन्या॥ नीलात्यलरुयं विन्दुवा
मरुक्कविष्मविही॥ दिद्यन्नत्ताकतदाया, रुमारुनरुषिता॥ लवणपद्मास
नीदवी, वर्द्धपद्मासनहिता॥ प्रवक्ष्याम्यमरुदवी, वान्शीदिद्यन्नपिही॥
गुणितानप्यनमः॥ पूजनं॥ पिदवा॥ वस्त्रा ल्यादि८॥ मृष्टिताङ्गादि८॥ शिवा

[illegible]

[illegible]

यथा नृणां हृदी न कुर्यात्प्राणमित्री ॥ कीमायत्री मन्त्रः ॥ वदन् वदित्वा मित्री ॥ यामायत्री ॥

यूष्यन्ती दत्ती नकुमाख्यावसाहिनी ॥ कोसायूनी महाकृष्णवटवृक्षनिवाहिनी ॥ याम्यपीथ
हिमनिर्घा ॥ कोमानोवनमासुत ॥ ॥ ३ ॥

विष्णुमहाय कोमारीवत्रतावली ॥ हस्तियात्राय नमः ॥ पूजनम् ॥ वस्त्रा
 ध्यादि ॥ प्रिया ऊर्लि ॥ वैं अर्वां वीं वूं वूं कामात्रीविश्वयादकां ॥ धनं व
 लि ॥ जाय ॥ कां स्वाहा ॥ काय ॥ वात्र ॥ रावमकावोडीत्यादि ॥ अर्पणं
 दि ॥ हस्तिकामात्रीपूजा ॥ ॥ अथ खं पूजा ॥ आधनं कं ॥ सिंहा
 नाय नमः ॥ ध्यान ॥ सिंहस्तु शाशि ॥ शेषनामत्रकर्तं अख्यावदुर्लभं ॥ सी
 खं वक्रधनं ॥ शान्तिदधती ननु विरि ॥ ॥ हस्तिका ॥ आमका हृदका नकक
 ल ॥ हस्तिका ॥ शीक ॥ हस्तपूना ॥ इन्तर्दन्तिका ॥ त्रितीरुवदुवात्रानामस्तु पुली

॥ कृष्णिभ्यामनमः ॥ पूजना ॥ विष्णवे नमः ॥ अक्षितामहादि ॥ ऊ
यादि ॥ अम्मा श्रीनृदचक्षुःदवीपादका ॥ ॐ श्रीपुत्रक्षुःदवीपादका ॥ ॐ
चक्षुःपादका ॥ मम चक्षुःनायिकादवीपादका ॥ ॐ चक्षुःदवीपादका
॥ नृदेवक्षुःवतिर्षिदवीपादका ॥ डाडोचन्देवपादवीपादका ॥ अम्मा वक्षुः
कादवीपादका ॥ धर्मवलि ॥ तेजः ॐ श्रीमहादेवदवीचक्षुःकायाय
लीपादका ॥ विद्यामहलि ॥ धर्मवलि ॥ षडंग ॥ वलि ॥ यानिमूला ॥ ऊपा ॐ
श्रीसः ॥ वाहा ॥ काय ॥ धर्मवलि ॥ ॥ नमोऽथ विलिपूजा ॥ आधनः

कृष्ण॥ सिंहासनायनमः॥ महिषास्त्रायनमः॥ धुम्भासनायनमः॥ निधुम्भा
स्त्रायनमः॥ कुंजीकात्यायनमः॥ कुंजीकुम्भनमः॥ कुंजीउग्रव
धुम्भनमः॥ व्यान॥ त्रैलोक्यवधुम्भमहादेवी व्यायगुरुगवतीसिव॥ तस्मिन्
मीकवधुम्भानानावत्त्रोपल्लितादिद्यवसुपनीधानादिद्याल्लोकाना
ल्लुपिता॥ किन्नीटीकुम्भनाकात्रैः कयुत्रेमलिनोपत्रैः॥ वत्तमालाविचित्र
लाउमालावल्लीदिता॥ अष्टादशकुम्भाकाकापीनवद्वसुनावत्त॥ सर्वल
कावसंयक्ता॥ तडित्काटिसमप्रका॥ खड्गवत्तथवत्तवत्तीकुम्भनाधुम्भ

॥ वनेदमनरुकाव धूलपायसः सतिता ॥ घाटाश्च नर्तनीरुका स्वप्नस्वप्ना
न कंठापाशकां ॥ विंदमदातथासिद्धिं सिंहासनाय विस्मिता ॥ अधस्तित्वा नि
वस्थितं मरिषश्च मरुतामूर्तं ॥ तस्मिन्निर्गता देह्य मरुतावत्तपत्रा कुमभारु
दयनिरिधूलनं विभक्तं सौमित्रा नृणां ॥ प्रवृत्त्या त्वामहादवी सर्वकामरु
सप्तदा ॥ (सपाथा उदाहरुकाव स्वप्नाश्च मन्त्रिना ॥ नृडवधु प्रवधुच च
धुमप्रवधु नायिका ॥ चधुमचधुवती चैव चधुनृपातिवधुका ॥ नावनामृन्
सहस्रं नीलाधुक्ता च धूमिका ॥ पिताधुपाधुलाय्याया मलीटस्तु रुनिस्ति

ता॥ सपनिवानसयका आयाहु कुरुमधुत्ता॥ ॥ कुरुतिथानपूर्यनमः॥
कुंडुवचधुदवीविमरुदुर्गदिवीविमरुतन्नावलिषत्रादयात्॥ गायत्री
॥ पूजन॥ छिद्व॥ ततापनिवानपूजा॥ ॥ सगैशनमः॥ गुनस्थाननमः॥ द्वां
रुद्रपालायनमः॥ यौथानिनीस्थानमः॥ लं॥ न्द्रायनमः॥ मं॥ यमायन
मः॥ द्वां॥ नैदल्यायनमः॥ वं॥ वनस्थायनमः॥ यू॥ वायव्यायनमः॥ सू॥ कवना
यनमः॥ द्वां॥ व्री॥ क्षनायनमः॥ न्रु॥ विष्णुवनमः॥ कुं॥ बुद्धक्षानमः॥ ॥ यत्तनैव
वि॥ श्री॥ जयादवीनमः॥ श्री॥ विजयादवी॥ श्री॥ अजितादवी॥ श्री॥ अरूप

नाकितादवी२॥ श्रीजम्बुनीदवीनमः॥ श्रीसूरुनीदवीनमः॥ श्रीमाद
नीदवीनमः॥ श्रीआकर्षनदवीनमः॥ ॥ अंअं नृदवधुदवीनमः॥
॥ ॐ ॐ वृदवधुदवीनमः॥ उंउं वृदवधुदवीनमः॥ मंमं वृदवधुनायिकाद
वीनमः॥ ॐ ॐ वृदवधुदवीनमः॥ उंउं वृदवधुवतीदवीनमः॥ डां डौं वृदवधुवृषा
दवीनमः॥ ॐ ॐ ॐ अतिवृषिकादवीनमः॥ अं वृषाहिन्त्यादि। ८॥
असिर्तागमदि। ९॥ डांअकिनीपादकी॥ लंलाकिनीपादकी॥ नंनाकिनीपा
दकी॥ कंकाकिनीपादकी॥ संसाकिनीपादकी॥ ॐलाकिनीपादकी॥ शुं

III

वईअकिनीखावलिगृह्णश्चाह॥**पूँपुष्टुनिविपीभयपाइकी॥**कां कामनू
पपीभयपाइकी॥**ऊँ**ऊँअनंधनपीभयपाइकी॥**डँ**डाअनपीभयपाइकी॥
॥**अतनीवलि॥**मथासा॥**अ**धान॥**तुँ**वज॥**झाँ** झाँपाइकी॥**छीँ**झीँवधुवा
पयपाइकी॥**आ**आँझीँपाइकी॥**नू**डवधुवा **दि**दि॥**पिया**अश्लि॥
तुँझीँनाजवदईकुँडग्रवधुवाविपूमईनीहूँ **वुँ**वुँ **श**सदानकरखाँमाँश
स॥**मृ**त्युरुनपाइकी॥**आ**अँग॥**विलि**वि **य**य॥**तुँ**वधुवाचल्लमका
नासा **दु**मखीसमखीतथा॥**न**वगीपुथमाधाना **सो**म्यरीमामकावला॥

जयाव विजयावेव अजिनावाय नाजिता॥ महाकादाविदुपाकी शुक्
माससमा रुका॥ जागरानीव सरुहानी॥ डंशनीपृथनवती॥ विद्यविष
यहानीव आसिनीसह्यहसिनी॥ नृदकालीसरुदाव रुदलीमासरुडि
का॥ दार्ष्टिग्यागिनीस्थावलिं गृह्णन्त्याह॥ स्वाकमहावलि॥ समसुम
रूपीथिर्सिंहासनपीथिचि॥ अमपी० दशपदश संदाहप्रसंदाह दि
व्यसिद्धिसमयवक्रपाइका॥ उक्तामूकजडक्रियावित् गतसर्वं ग्रीहद
यायपाइकावलिगृह्णन्त्याह॥ धूम्रपीथ॥ साहनीरुप॥ जपा॥ कांवा

ॐ श्री जी स्वाहा १०॥ एव स्वाहा १०॥ शुं स्वाहा ५४॥ मुं स्वाहा ५४॥ स्वाहा ॥ ॥
नैऽ श्री रे न व ड वा वा ॥ श्री स न र्त्त म सु र्त्त लान्क कम ॥ य द नि दि नान न न न
कि स र्त्ती मा स्तृ प न्या य च्च रु र्त्त म् क ल क ल ग तं पं व कं वा न्या प र्त्त ॥ व ल्ता ना
प र्त्त का न्या ४ प न न पि च्च रु र्त्त ४ धा ३ ४ ॥ स्त रि ष कं द या षा मूर्त्ति म थ्य रु स
प र्त्त क ल वि न्द प थ्या रु स दा ॥ रु र्त्त का मा ल वा लं प न म लि व क ला व क द
वी क मा न्या ॥ श्री ना थं च्च रु र्त्त म् न व न व क लि तं य ग्म रु द रु सा न् ॥ शि त लं
सि द्धा व ना न् प थ म क लि य ग कां क न वा धि का न् त स्या वे हि श्र पृ ण न व पू न्

षकमारुषसत्याद्वित्रयो॥ सक्तानं गमयिष्ये कर्म कलसकलं वा उद्धमता क
मानं आद्योद्धममुत्ताद्येपत्रिरिमविमर्लं पूज्यसक्तवद्वन्द्यं॥ आध्ववस्तुत्ता
नं कलकर्मसकलं मलुलस्तन पूर्व संस्कारं यिक्मनपद्युमलक्षयकल्पि
सुसिद्धिनिवाएन॥ मध्यविश्रामरुमिः प्रवरुवमनरुवप्रत्ययैस्वाधिका
नं संसृष्टं यनतस्मेनमथगुनवत्रं रेवर्वीक्ष्य कञ्जः॥ ॥ **तयासासकिरुग**
तापिपथगतियुता रुद्धनापिप्रकाशा नं तस्याधीडाठियानपलकलस
रुगं मध्यमं सुदीर्घं॥ जीतं गीतं जालं धनारव्य प्रकटितनिलयैदद्विः॥

स्वेवका (६) श्रीवामश्रीपूरुषी (७) पशुजनरुयकनूत्रितयनविष्टी ॥ श्रीं त
स्या (८) एकामरूपं मदनकलियूतं सर्वसिद्धालयं च श्रीं शिवात्मकसम
पत्रमज्ञिवकलालंकृतं यागवन्दं ॥ श्रीं तन्म (९) अदिचलिप्रपत्रमसूत्रकन
४ विन्दुवर्पं सूरुपं श्रीं निर्यातनन्दसूरुपं तद्वपनिमथनाप्रयुक्तार्थविरिदन
॥ श्रीं विद्यारागभगममनरुवविमलं तिष्ठुपी (१०) ललाट उज्ज्वलार्थसमस्त
स्तिगिलयजननिवृद्धाकिमिरुदा ॥ श्रीं तज्जदवदवीश्रुकलकलमया
नन्दश्चिस्वर्तण्डं गुर्वीश्वविन्दरुता पशुरुयकननीदियसिद्धाध्वरुपा ॥

प्रो निर्यं किन्नाधुन कारुगमदितपदानन्दशक्तिप्रसिद्धा, श्राकर्वनीतय
कामान्दरिमतवनतन ४ श्री कृष्णकाशानमामि ॥ ॥ नुं जसकानमनमा
एतन, अन्वयं तदवता ॥ निर्गमपीगीकुं कान, सिद्धार्थयप्रकीर्तिता ॥ रुश्रीः
रुतिगुलावाही, वृद्धये (न्येकदम्बकी। सकटसहितं थाकं ४, अन्वाचपुरुवा
सिनी ॥ गृहं वन्द्यपूर्णं थाकं, राममथानरुं नवं ॥ ॥ गमयमसलिकादवी राममा
एतप्रकल्पयत् ॥ अन्वयं प्रतयं सानं, मधिकानश्च काकन। ऊन्यवृद्धाणि
लाकान, स्तिथि श्रीकामवृषक ॥ कीर्तिनिविनिवृद्ध, सिद्धं वै वदसागन।

उपशर्तं तस्य दवः। याजानां निकलकुर्म॥ धाउः शधनरुदन न्यासं कूट
क्रमकथा। पूजितं सिद्धिर्दरुद स्वसिञ्चारुनिवदत॥ **विगता**॥ वन्दसदास
कलसौ कोलिकसानरुतं कुरुध्वननवकपावकगाम्बमाला खद्याङ्गख
पुववरुटककाशरुसं दालस्त्रितं प्रिपुवनध्वनवन्नराया॥ श्रीः शसन
वदकनाथः प्रिपुसिद्धं ४ कुरुध्वनाविऊनकाश्चनधूमकव गेनीलित॥
गकिमकालिगानध्वनी पायासूत्रसुवहनालिषिवाकनव॥ सिद्धनसा
यमनमाद्विगतककृता निज्जिघ्रनाद्यनपथाधनदरुलक्ष्मी विवीकाथा

नमनमादकः शक्यः पायाद्वयंगलपतिः सकलार्थदाता ॥ ~~बुद्धाक्षनी~~
क्रियासाधुनवनमिता साध्यामंगलाख्या सागनेनी साचद्वर्गुरुगवति
धुरुगमाहकाधर्ममधु ॥ सावकासाचविष्णु गुरुगलसकलारुनवीरु
श्याला साभकानकनुपावि विधुनदयाया गिनीत्वीनमामि ॥ कस्तिका
पालनल्लारुवरुयुरुनल्लारुनवरीमधुर्वी खदीगरुवद्वरु एककार्जसिद्ध
॥ ॥ बुद्धाक्षी कमलन्दसोम्यवदनी मारुध्वनीलीलया कोमात्री विपद
प्यल्लसनुकनी चक्रायधवे प्रुवी ॥ वानाक्षी घनघानघघनमुखी उंडी न्ध

वजायूषा, कामभुगलानाधरुं नवगलानवद्वहुममाहका॥ मायाकलुल
नीक्रियामधूमतीकालीकलाभालनि, मार्गगीविजयाजयारुगवती द
वीशिवासाकृती॥ **किंकिं कनवल्हराजिनयनी**, वाग्वादिनीहेचवी, जी
कालीजियूनापलापलमयूंमाताकामात्रीधर्मि॥ यादवीमधूकेठरुष
मथनायाचलुमभुदिनी, यामाश्यामहिषासूनपमथनीयानकवीजाष्ट्रि
या॥ यासाधुक्रुनिधुक्रुदेखदवनीयादवदवाष्ट्रिया, सादवीममनदद
द्विष्टाहुजेचलुजयानदहु॥ **मूनरुहावलीनालि**, स्वमवहावलीमम॥

तस्मात्कान्तारवशा नक्षत्रमापन्नमश्चरी॥ नृगर्गधदि॥ तर्प्यता॥ वयपू
जा॥ पशुतर्प्यता॥ समयकृत्य॥ अतश्चरुमीयाविधि॥ नवमीकृत्यावि
धानश्चतनपूजायाया॥ ॥ दशमीकृत्यायविधान॥ मङ्गातिथ्ययज्ञाः
यायश्चतयज्ञाधूनकाव॥ कलहमश्रुतिषविय॥ वेगसिंदूरसाम
मारुनीविय॥ स्नानविय॥ अगधूनकाव॥ अज मानयालाकाधस॥ चत
नस्त्रिकवाय॥ खड्गलवजाय॥ शिवशक्तिवजाय॥ मनक्कालीकलः
सत्त्वान॥ यायातजाय॥ ॥ गमनीयार्थनाराय॥ क्षमायविज्ञयायच॥ ॥

रूपद्विनाशाय पुनरागमनाय च ॥ ~~कामसंपादा~~ ॥ कुंकुमाये नमः ॥ ॥
~~कामसंपादा~~ ॥ धवलाय सतय ॥ कामानी पूजा ॥ शिवत्वं ॥ मानका साक्षपा
इयाय ॥ धनधनकाय कृष्णपूजा श्रुय ॥ वीनराज ॥ कर्नकपूजा ॥ कर्नक
अरिहारा ॥ ॥ ~~गिडपचलुमहादुमीदू~~ जाविधिसमायी ॥ ॥
१ ~~पादकृत्या~~ गमनावनचन चंपकस्नान श्रीखलुधूप धनजा कृष्ण
दाकसत्त्व पुत्रिमाह धनी रात्रपाण्डु ल्यक्का विहि नत्रिलस मत्रच वासन
लक्ष्मिहारा पुष्टवप्रदान ॥ ~~धनपादकृत्या~~ ॥ ॥ ~~द्वितीयाकृत्या~~ श्रीखलु

[illegible]

तत्र मासहीनाञ्चा दवतावेष्टुवी चतुनायिका काधरे नव ॥ **थनचतुर्थीया**
॥ **॥ पर्यवमी कृत्वा** कृत्कमचन कायिचूपस्वान नील धूप स्वध्यापाठ
लल चर्वन खानामाध मासदक्षिण मानीकन त्र मूगद्विचत्रीञ्चा दवता
वानाही चतुनाउन्मरुते नव ॥ **थनपर्यवमीया ॥ ॥ पर्यवमीया** गमनाचन
चत चूपकशनस्वान वालधूप कष्टिपाठ क्रिपूचर्वण मा ० लद्वामाठ
काना ० दक्षिण लिजलदै नत्र कष्टिञ्चा दवता वृडाही चतुवती कपा
लीसरुते नव ॥ **थनषष्ठीयाविधि ॥ ॥ सकमी कृत्वा** नकचतुनचन सतः

शालस्नान, शुष्कमांसधूप, लीपायु, सवचर्वन, चठामाठ, न्वागदक्षिष्ण,
कलनत्त्रिजा, दवताचामधु, चक्षुद्रुपा, लीपसरेनवा ॥ अष्टमीकद्रु
या, चक्षुधुमचन, जीलस्नान, धूपाशधूप, दृष्टपाय, हाशचर्वण, खलमीमा
ध, कनगुलीदक्षिष्ण, रुठिकनत्त्र, क्षीनजा, निवय, दवतामलातश्च, अ
तिचक्षुकासंज्ञान, रेनवा ॥ अष्टमीकद्रु ॥ ॥ नवमीकद्रुया, धीखक्षु
चन, लकस्नान, गुणधूप, कावलपाय, लाचर्वन, रुनिमंठ, गुलादक्षि
ष्ण, रुननत्त्र, थझाकाजा, दवताकायायसी, डगवृद्धकरेनवा ॥ अष्टम

नवमी कद्रया विधौ समाक ॥ ॥ नीलायल दला कार्ने, हेनवायिद्र
तासर्न। अतिनूपं पनं ध्यात्वा, समस्त स्वकुन्द हेनवनमाहुत ॥ ॥
हिनल्यकनिका नका, रुद्रागदनसूपरा जिह्वा देन तिनका शु, वद्रुद्रपा
वसफमी निमाहुत ॥ ॥ ॥ किष्वावनासनाङ्गवलावुद्रुद्रमिस्त्र
का, नऊपूज समाकनापनकला, वालाकर्त्तवाधुना, मायामद्रविषुद्र
नद्रपनिर्त, मूलवविधुसिका, साशनीमी सस्तकामऊननीगकिचपासा
इवी ॥ ॥ ॥ नमसिरीस्वननऊ, यावननपनमद्रदि ॥ ॥ गस्मागुत्वदियद्रयक्र

[illegible]

व्या ४ श्रीगणिकामनया नूनन विविशा (क्षवस्तुल्य ४ श्री ३ वा नाहीदवी मरुप
निधापयिष्य ॥ ॥ **नायपूजा ॥ मान (मन ४ श्री २ नलजीतमन्न वस्तुल्य ४ श्री**
३ वा नाहीदव्या ४ श्रीगणिकामनया विध्वयाणामलात्मवनिमिरु कपंचाप
वानपूजामरुंक निहा ॥ ॥ श्री ३ वा नाहीदवीया कृयायाता कृयायापू
जायावाक् ॥ ॥ अथत्यादि श्री ३ वा नाहीदव्या ४ प्रासादस्य जी (भुञ्जानक
मर्कितुं स्नानाकन प्रवहा कर्मलिमिरु क ४ श्री ३ वा नाहीदवीपंचापवात्रेन
रुं पूजयिष्य ॥ ॥ ॥ अथत्यादियमानस्य श्री ३ वा नाहीदव्या श्रीगणिकामन

[illegible]

चलचलचलिर्गंवात्रिगाहगवर्कं **मंमंमंमायवृपंप्र**हामतसतर्गंरुवव
द्वगपालं॥४॥**संसंसं**खरुसंहाहिकलधवलंमाहसम्युर्गुतर्गं **मंसंसं**
उहर्गंकलमकलंकलंमकुमूर्हितनर्गं॥**जंजंजं**हानार्थकिलिकिलिकिलि
तंरुअगुआललं **जंजंजं**कमदंप्रहामतहातर्गंरुववद्वगपालं॥५॥
खंखंखंदुरुदंविषममृतमयंकालकालंकलालं **दंदंदं**दप्रवर्गंदरु
दरुदरुनंनरुसंदिशमानं॥**कौकौकौ**कालनार्दप्रदरुदरुदनंगर्जिता
रुमिर्कंपं **वंवंवं**वाल्लीलायनमतसतर्गंरुववद्वगपालं॥६॥**संसंसं**सि

द्वितीयं सकल गुणमयं ददवदवैयुसन्त्रं **पँपँपँपँ** नारुं रुत्रिरुत्ररुवनैच
 दुसूर्याग्निनरुं । **तँतँतँतँ** धर्यं नार्थं सकल रुयरुत्रं सच्च दवस्वरूपं **नौ**
नौ नौ नद्वरूपं यक्षमतमततं रुत्रवैरुयाली ॥ १॥ **रँरँरँरँ** स रँ रँ रँ मि
 तकरुकरुं मूकियागदिरास्यं **थंथंथं** वरुवरूपं हित्रकपिलजतावन्यवन्य
 प्ररुसं । **ढँढँढँ** कालवानैरिदहातनननं कामदध्यापदानं **रौरौरौ** रूतना
 र्थं यक्षमतमततं रुत्रवैरुयाली ॥ ८॥ **॥ रुत्रिरुत्रवाष्टकं समाफ ॥**
॥ ११ रुत्रनमः ४ पत्र दवताये ॥ **॥ षडाध्वनपंकवृक्षानुविनाज त्सपना**

कनालषूतजालसकीं सधामधुर्लडावयनिपिवकीं सधामूर्तिमी उः
विद्यानन्दनूपं ॥१॥ कलत्काटिवाला केशाक्षनृत्तंगी सुलावत्यष्टंगनक्ष
राहिनामी मरुपद्मकिंजल्कमध्वविनाज्जुलिकाक्षल्लसंगी रुडधीरुवासी
॥२॥ कनकिंकिशी नूपनाझासिवत्त युरालीधलाख्याडपादानविन्दो अऊ
क्षायगाथे ४ सूत्रे ४ सर्वमान्यो मर्मरुदविमान्या मूर्धरुवयामि ॥३॥ सुषनीव
नावद्धनीवी विनाज्जमरुपद्मकीवी कलापनिगमं सूरुदद्विद्विषवर्तना
हिं चति प्रावर्ति नम्यत न मजी रुडर्त ॥४॥ लसद्वरुमर्तगमा लिवककेश

पमाग्री सुनद्वंद्वमन्वास्वजादीं रुजद्वयपुष्पहिनामंतवर्द मरुदाव
दीर्घसदासुखकादीं ॥ १ ॥ हिनीषप्रसूनासुसदाद्वंद्वं कलदानकाद्वंद्वं
पाद्वंद्वं कलदान कयूनरुषा कलद्विसूत्रकिं रुजधीरु
वादीं ॥ २ ॥ सुनासापर्वपद्यपजयगादीं नचर्वं प्रियादानद्वंद्वं कदादीं ल
तालसद्वंद्वं कलद्विसूत्रिहृषा कलद्विसूत्रिहृषा रुजमिठुद्वमन्वा ॥ ३ ॥ चलत्वं तलं
रुजमन्वा रुजद्वंद्वं घनसिंघविज्ञाप्रसूनेर्हलकीं सूत्रमोलिमाहिकमद्वंद्वं
नखाविलासासद्विद्यमयानमीध ॥ ४ ॥ रुजिणीरुवानीस्वचूर्पंतवर्दप्रपं

वात्यनयकि सुश्रुं प्रसन्नं पत्रात्रा उवा उन्वत्री उय प्रीत्वां शिवाकायविष्णुं
शिवात्वां रुज्जुं ॥ १॥ त्वमर्कस्त्वमग्नित्वमापस्त्वमिन्द्र त्वमाकाश त्वव्यय
शुचिदास्त्वं त्वदन्यानकस्त्रिपुषं वाक्सर्व सदानन्दसंचित्स्वतुषं रुज्जुं ॥
॥ १॥ गुनस्त्वं शिवस्त्वं च किस्त्वमव त्वमवासि माता पिता सित्वमव त्वमवा सि
विद्या त्वमवासि वृद्धि गतिर्ममतिर्द्विसर्व त्वमव ॥ १॥ शुतीनामगम्यं तव
दंगमात मरिम्नानजानि पारं तवांगं शुतिं कर्तुमिच्छामि तत्त्वरुवाही रु
मस्वतिदवी प्रमुख ४ किलार्ह ॥ १॥ अत्र त्वस्य सन त्वस्य सुखान त्वस्य मूर्तु हिन

स्थदवायेर्मर्गं स्थसिधुन्य रुवान्स्थरीत्यावर्मांशहिरुद्र नमस्तु नम
स्तु नमस्तु रुवाही ॥१३॥ ॐ मंवात्तदं धीरुवाही रुजंगं ॐ दंयप ० रु कि
यूकनतस्मै स्वकीयं पदं ॥ १४ ॥ धर्मावयमानं धियं वाष्टु सिद्धिं रुवाही ददा
ति ॥१४॥ ॥ ॐ ति धीरुवाही रुजंगं प्रयात कार्णं समाफ ॥ ॥

॥ ॐ नमः ४ धीपवदवगाये ॥ ॥ नमामि कृष्णपिपीली कृष्णगयषि धमि
ली समग्रतत्त्वज्ञानासयावपात्रगङ्गात्री शिवां प्रवालकाधत्री सुलक्ष्मी
कलषनी ललाभगुणसूनी कलत्सदीपसाकली ॥१५॥ मरुदुक् स्थपार्थिनी

सनत्कुमात्रसंभृतां, सूत्रासूत्रवृद्धितां, यथार्थनिर्मिताभृतां, मगकृत्वा न
चष्टितां, विकान्ददाषवर्जितां, ममकृत्विचित्रितां, विष्णुप्रतत्त्वसवितां ॥
शान्तिनास्तिनिर्मितप्रजां, मृगन्दवारुणागजा, पुद्गलसत्त्वतीक्ष्णसदादि
कलकलं, सुददकलं विनदकलं, कुङ्कुमाविष्णुविष्णु, कपालस्वपूषा
विष्णुसूक्ष्मिकाप्रकाशितां ॥ ३ ॥ सूत्रवृद्धे विष्णुतिनी, कथानपादावालि
नी, कर्तातकामघातिनी, सूक्ष्मकपालमालिनी, सुनिश्चयकल्यसाविनी, भ
भानन्दमिवासिनी, द्विजन्दवृद्धताविष्णु, सरुप्रसूर्यसाकला ॥ ४ ॥ धनंज

यो कवत्सलां सुसिद्धिकालवर्चवतीं सुनृत्यवृत्तुमंशुर्नापातायिनीषडाप
गिं नमामिमातर्नसखीं सकर्मकाललगतिं रुवप्रियां च पार्वतीं मन
नक्षत्रिसम्पदां ॥ ३ ॥ यः ॥ ४ ॥ प्रिरुकि मूकिदी नमस्तुतं व कालिक लिवदि
ऊरुवात्मिकं जयध्वनीशिलावनीं यसीददविपाहिमां यऊनीव सुव
किच स्मरंतिमांनवीं ॥ ५ ॥ रुवत्तुमाद्यवांद्धिता ॥ ६ ॥ सदेवतरुवद्धि
या ननाप्रप्रलिवधना यसीमां कनामिकीं नृतीवमाहितात्मन ॥ व
थविचष्टितस्यत कनयसादमच्यतं यथामृताम्यरुंङ्गगत् ॥ ७ ॥ मास्तु

तिमयलितां, पञ्चकालिसाधका ॥ नतपूनः सुदहन, पतन्निमाकृष्टाग
त्र ॥ १॥ ॥ ~~रुग्निग्रीवक्रगमविनचितं वक्रगमथानुगिसमाफः ॥~~ ॥
~~१०० नमः श्रीरुवाचो ॥~~ ॥ कदम्बवनमध्वगर्भ, कनकमकमपस्त्रितां, सदम्ब
नरुवासिनी, सततविरुसोदामिनी, विद्यन्वितज्जवान्त्रि, विषदचन्द्रचूडाम
लि, शिर्यवककुट्टिनी, शिपूनसूचनी माधय, कदम्बवनवासिनी, कमलिका
टिकारुसिनी, कनककनसासिनी, खचितनल्लसिंरुसनी, कनकनककु
ला, कवतटनसमोकिनी, शिर्यवककुट्टिनी, शिपूनसूचनी माधय ॥ २॥

हिमृर्हि जननसुक्तीं, जिह्वनावनकोवितां, धृतामयविलाकिनी, जिह्व
नपारंगतां, जिह्वपपनिष्कतां, हिमखवकुमध्वसिक्तां, जियवककट्टवि
नी जियूनसून्दरीमाधय ॥ ३ ॥ ऊवाकसूमसन्निरी, ऊनऊवन्दनानन्दिता
घनसूनपनाजितां, गुननितीषसयखलां, पदानतवसून्दरी, उहिनच
न्दवञ्जितां, जियवककट्टम्विनी, जियूनसून्दरीमाधय ॥ ४ ॥ प्लुनीक
कृतप्लुनीककृतप्लुमाधयकां, प्लुनीकनयनाविपुजितां, मातलिङ्गक
लिकां मनारुनी, मातनीजियूनसून्दरीरुऊ ॥ ५ ॥ ॥ नृतिनीजावायविवि

तं यं वनत्ता समाफ ॥ ॥ ॥ ॥ कुं नमम कामाय ॥ नमा शुनम कामाय
सुदुदरुपनापय ॥ उका किनि विष्णु आत्मा, नादाख्य विन्दुमालिनी ॥ ॥ अ
हायत्सममत्यन्त्र ॥ अत्र विष्णु आत्रिणी ॥ मरु कर्तुली निह्यं लं सम (अव्य
वस्थिता ॥ सामसूर्याग्निमध्वस्तु, धामवापीपनापय ॥ कुं कान विगुहावस्तु
रुका नाद्याद्वध्वनिनी ॥ ॥ ॥ ॥ वागाप्रसतध्वस्तु अत्र न के वादया यय ॥ रुक
नाईकलाध्वन, पद्म किंजल्कमात्रिनी ॥ ॥ ॥ सकलाख्यमरुमाय, वत्रदला
कपूजिनी ॥ उक्कनादिमध्वस्तु, समैकेकषरुदिनी ॥ ॥ ॥ अष्टलं हाकला

दवी, रुदेनी वक्रवर्धु (ग) ॥ वक्राविष्टु च नृदत्तं नृत्वन नृसदाशिव ॥ ५
॥ नृत्तपंचमराधना पादमूलव्यवस्थिता ॥ जेलाकजननी दवी नमस्तु
किन्नरी ॥ १॥ नृदापि गलमध्यस्तु मृक्षनर्तुद्विपिनी ॥ विमलाध्वगता
दवी कटिनाचाईवस्तु ॥ ७॥ दुषानकनिकारास द्वादशकावलीविनी
॥ उमाईकस्त (ग) नेत्री द्वादशदिश्ववर्धु ॥ १॥ नृन्या नृन्या नृनावस्तु
रुंसीखायादायिनी ॥ लीवाक्षपनमदवी दक्षिणरुनगमिनी ॥ १०
॥ नासाग्रवसुमूलीन मध्यसूत्रप्रवाहिनी ॥ हस्तवपनमानन्दतालुमूर्ध्व

व्यवहृतिना ॥ ११ ॥ नादघटिकसंयुतं गुणवृक्षममन्त्रितं ॥ सुलसुखं तम
पूज्यं धर्माधर्मपूज्यं ॥ १२ ॥ कार्जका नलक रत्नां विष्णुनादविग्रहं ॥
पनात्यनपनपुष्टं चेतन्यं ह्यवतकुर्वी ॥ १३ ॥ सर्ववर्धनी देवी गुरुतत्त्व
निविष्टं ॥ अहं नीममहाकाण संसा नाशुवता निशी ॥ जया च विजया चैव
जयनी चापनाजिता ॥ उमरू वीजमध्यस्तु नमस्तु पापमावनी ॥ १४ ॥ वश्वमा
हक नीदवी धातुना नयवहृतिना ॥ उमदीना किंस्तुलनं मरुतयुक्तममन्त्रि
तं ॥ १५ ॥ उमदी मं रूदी गेनी मयायुक्त्यवाहिनी ॥ स्वकुन्दी रूतवीदवी ॥

काष्ठा नमरुते नदी ॥ ११ ॥ इष्टा त्वष्टा विद्युर्जिह्वा तानकाक्षिरुयानन ॥ नमाः
मिदवदवशी अघानघानविक्रम ॥ कालावतीवगमुखी इमादवीसुनः
स्वती ॥ रुंसवाक्षवदुदवी एममुखी इकिमालिनी ॥ १२ ॥ काष्ठीकी
गादवी दुर्गाकात्यायनी तथा ॥ निह्यकिनासमाख्याता नकाप्रकाक्षवाप
ना ॥ १३ ॥ वाङ्मीमारुध्वनीवेवकोमानीवेप्रवीतथा ॥ वानाहीवेवमारुद्धी
वामुष्टात्वरुयानन ॥ १४ ॥ यागगतिर्वहिवशी कलाष्टकविरुषित ॥ वेडी
वेवदुम्नामया याम्यानेमत्यवान्दी ॥ १५ ॥ वायवीवेवकोवनी रूष्मन

ASHA ARCHIVES

3555

राजा वंदीरु ख द सु म गा ग ल म व कु था द ता सी र्व ऊ वु क ॐ म न स ता
उ ती व ग ड पु ती म ख पं दी त सा धु वो ड ल म ता धी न व क तु द ता य

म न ते उ त य चा ड गु नी ज नी त दे म द त ग ता गो रं स न ड न वी ना दा ता वी ना ज
व का ॐ स न म वी ना ना प ती ना ती वा न ना दु ग द वी ना दे ना दे न वा

ASHA ARCHIVES

3555

वउदाहता॥ययागभवन्तु काञ्चा मृदुलासाञ्जयनिकी॥२३॥चत्रिकाम
कंचेव दवीकाष्टंगथाष्टकं॥तथाकालीउमादवी दवदूतीनमास्तुत॥३४॥
रुद्रकालीमहादवी चर्ममल्लुरुयावद॥महावृषमहासानक॥नमस्तु
किन्वपिती॥२५॥रुद्रवस्वतिस्वाहा न नमस्तु किन्वपिती॥दयीकचष्ट
मैम्यकुम्भकिस्तननियोजयत्॥त्वंदवीक्षनक्षमापत्ना कनक्षकनक्षमम४॥
ज्ञानाधिनामाहामाय उगदिक्कुमिवदिष्टं॥२६॥यस्त्रिदं पथतस्तुत्तं तिस्र
ध्यात्वेवमानव४॥याप्रातिर्विनिता कामान् स्त्रीर्षीरुवतिवञ्चरु४॥२७॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॥ ॥
१ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॥ ॥
वतानां द्वापराव्ययं वातपृष्ठवत्वाय ॥ भालस्याय ॥ थं कनकय ॥ कुसा
नं च दयी ॥ नागीनकादयी ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॥ ॥
आगमदवतानां द्वापराव्ययं द्वापराय ॥ सडर्शुमाल ॥ यगसनाग ॥ गलन
ध्यानाय ॥ पूजावत्तु कया दामजीयावत्पृष्ठावत्वाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते
वासुदेवाय ॥ आदित्यनजाय नपूनाग ॥ वायुदवतानां द्वापराव

गल्लनथाया नाय ॥ ॥ हुं ननु तस्य नाय ॥ सामन जायलपूनाग, अग्निद
वतानजा हाश्चराव, दखन, मिखास्याक नाय, पवध, पतस्याक नाग,
मलनपूना ॥ ॥ हुं नमाग हाश्चराय ॥ अंगनन जायलपूनाग, दिनर
जाय, कलरुदवतानजा हाश्चराव, अथस्याक वास्याक, पतस्याक द
यीव, इदस्याक शय ॥ ॥ हुं नमायागिनीया ॥ वधन जायलपूनाग, दि
नमरीठ, उददवतानजा हाश्चराव, थन कनवयीव, हीषनकी घान
शयीव, नरैर्नागीदय, नफपिरुदय शय ॥ ॥ हुं नमाजनाथाय ॥ ॥

वृक्षस्य निन जायत्र पत्राग कात्र दव तान जा द्वा ष्व राव दिन ३ मरी द न
यन दाय मावा जाय लय मरू धा त ॥ ~~॥ हुं न मा हाना धिय न य ॥ हुं क वा~~
नन जायत्र पत्राय दिन ३ यिय दव तान ^ओ ^{ठा} ष्व राव कं श्री नन विष्णु व ख
य वन ऊवा न जायत्र पत्राय नाना त्राय वल द्या ल शयी व ॥ ॥ ॥
~~॥ अथ न द ग रुता ॥~~ ॥ कलिका या त ऊव न गुण व न जा शि सु दी र्घ आ य ॥
॥ ॥ ना हि क्षी या सा रा गी य छि त गी त व न कृ षि व न ॥ ॥ मृ ग शि ला या च व
ल च रु ख शू य व गी री न पु रु रु का र्य सि धि अर्थ व न ॥ ॥ आ डा या ख रु

रुयीव, ज्ञानीन्द्रमूपजसयाय्, ६४खम्रात्मा ॥०॥ पुनर्वसूया, स्वामिक वि
द्यावादी, कुरुनाग, सूर्याला कसैरुय ॥ ॥ पृथ्या दनीक, विवसनकलि
रागी, कनमम्राय ॥ ॥ म्रुप्रया, धनधन्य, रागी वसनयाय् कुरुनागी
॥ ॥ मघया खजाययय्, पूरुरागी तीर्थसलयजयव ॥ ॥ पूर्वखानुशीया
नाशसलाकनमूपजसयाय्, जसमइ ॥ ॥ उरुखनुशीया नाशरु सुरुजि
तधनवक्तु, धुवाक ॥ ॥ रुफया सुखरागी मर्थवादी, सत्यवक्त ॥ ॥ विजा
या, चलरावश्या सयवधीतिनारु ॥ ॥ स्वातिया, तजवक्त, सुखरागी, दीर्घ

आय॥ ॥विष्णुस्वया नीतिः॥सुसयीव सत्यवक्तुः॥सुप्रज्ञावक्तुः॥ ॥
अनूनाध्या धूलमन्त्री धर्मसल्य निमत ताम्बाय॥ ॥अथया पंथीतः
य वक्तुलारु॥ ॥मूलया रागीदाता सनायती नाङ्गरागी॥ ॥पूर्वाषाढया
यसुक्तवल्तवक्तु नाङ्गरागी॥ ॥उज्जयाढया नाङ्गरागी सुरागी सर्वास्व
श्रुतिमानि॥ ॥ध्रुवक्षयावक्षीकर्तु वल्तवक्तु सुरागी दीर्घरागी॥ ॥धन्य
यादीर्घ आय रागी पंथीत॥ ॥अतरीषया पंथीत उद्यवक्तु साकसकाप
वृद्धि॥ ॥पूर्वरुद्रया साकासिस्वयीव जस कलि॥ ॥उदरुद्रया नाङ्ग

रागी, सपू, सुस्त्रीयाफि॥ ॥ प्रवतीया सुनवन, अर्थवन॥ ॥ नूति
नक, रुल, यमाफा॥ ॥ अथ, अण, रुल॥ ॥ वि, शर्ष, निघ, मन॥ ॥ श्री, ना
काले, दुयीव॥ ॥ अ, आय, ववल, खंक, रु॥ ॥ सो, चन, राव, नऊवन॥ ॥
॥ ॥ सकल, कार्य, सिद्धि॥ ॥ अ, ॥ ॥ क, संगा, प, कार्य, निरुल॥ ॥ ॥ सु, सख, स्व
रागी, ना, कया, कपीति॥ ॥ ॥ ध, अस, वृद्धि, संपहि॥ ॥ ॥ ध, मूल, लाक, कस्तिव
वन॥ ॥ ॥ ग, सर्व, थ, कार्य, निरुल॥ ॥ ॥ वृ, अस, संपति, वृद्धि॥ ॥ ॥ ध, विरु, स
राल, प, का, सिद्धि॥ ॥ ॥ या, कार्य, निरुल, या, धि, वृद्धि॥ ॥ ॥ रु, रुष, वा, व, सपी॥ ॥

वं. ज्ञानीवचन॥ ॥स. सर्वकार्यसिद्धि॥ ॥य. सर्वकार्यनिसकूल॥ ॥
व. दानकर्मचरुष्टिययाय॥ ॥प. उपनासवानह्नासखासि॥ ॥सि. वि
कायाकासिद्ध. धनधान्यलारु॥ ॥सि. (६१)रावयाहीठ. साकुवक॥ ॥सा. दि
दावक॥ ॥धु. सर्वकर्मदव॥ ॥धु. वकुलारु॥ ॥व. जससम्यहि॥ ॥
उ. धनधान्यसम्यहि॥ ॥वे. सर्वधरागी. कचिरु॥ ॥**कृतियागरुली॥**
॥ ॥^३६४खपीज॥**३**स्कानसारु॥ ॥४नायनाश॥**१०**कार्यसिद्धि॥**॥मनधुरु॥**
मधुरुरुली॥नायविका॥**२**६४खनाग॥**५**६४खपीज॥**१**कुवमयय॥**८**य

स्याकवय॥ ३॥ सनमृत्युशय॥ ॥ १॥ रुदयीव (धषदयीव) १२ अग्नियाकरु
यदय॥ ॥ १॥ समानारु॥ ॥ १३॥ पुरुनारु॥ ॥ ३॥ सर्वदानारु॥ ॥ २॥ धनरुनिरु
य॥ ॥ मषडुनावृषकन्या ३१ धनकैरु १५ मकन १५ १० सिद्धिनारु॥ ॥ ॥ मीरुला
रु॥ ॥ मृगुरुरुल १५ ॥ वरुनाग॥ ॥ मिथून ३१ कर्क ३५ विष्णुमीन, ननधन, रु
गि, वध, पूरी, रु, याया, मन, धर्म, कर्म, आय, चय ४॥ ॥ नरुनाग॥ साक
सकाप ॥ ॥ मान्नतायीव ॥ १॥ ॥ नाजरुया १३ ॥ नरुवनरुशयीव ॥ ५॥ रुना १०
धननारु॥ ॥ ॥ रुमिलारु ॥ १॥ ॥ सवासरुयी ॥ ॥ मृगुरुरुल ॥ ॥ अपमानक २॥ विमि

[illegible]

ढिमवसि, शङ्खानकाठवृक्षाकाधधननोदि, शङ्खानकरावर्द्धनमाहादव
 किश्राज्ञा, श्रीकृष्णध्यान॥ १७०॥ सिद्धिमातावृक्षातिजाककाया, नामवानस
 ल्मारुवृद्धवासूनवसिकनद्रुस्वामि, नाजा, प्रजामारुवसगवलाकसिद्धिगुन
 श्राज्ञा॥ ॥ सिद्धनऊपनप॥ ॥ ॐ नमो शिवाय, गमनावन, ककुम, श्रीखधु, न
 कवन, श्वमकुन, ऊपनपावचितनगिय, नाऊसवनमसकु॥ ॥ जौंजौंजौं श्रीं श्रीं
 श्रीं रुद्र॥ ॥ १७०॥ ॥ गमनावननरुं सल, श्वमरानपा, श्रीं श्रीं, श्वनिश्वल, सवा, दाव
 श्वमकुनऊपयाय॥ ॥ या, ग, श्वनी, सर्वसल, श्रीं रुद्र, स्वाहा॥ ॥ ध्यान१७०॥ श्रीकृष्ण॥

१ मानमर्ष श्रीनिवा कूकूममग शिल (गमलाचन शिकक्यास्वान थववीर्य
शंसवालेन व ॥ वल्लभशय ॥ ॥ पतनिका मावासायाइइउवर्षुयाकायन
स्यत्वनक मावामइया मावादयकडीव ॥ ॥ मयत्रशिखाका मावासायाइ
इउवर्षुयामास्वनस्यत्वनक निरुवकूकू मावामइयागंठीनीयाइंदर्याव
॥ नृपस्वानयाकेशनगुहालयाकास्यत्वनक दिनउ सारवनवाजानकमठ
व साइइवा झावउववया कायवयक ॥ रायस्वानकागलसवसन गल
धुनास ॥ ॥ दधुगपलका आदिगवालककूलस्यैरुयावस्यैरुसवस्यैमावा

मदयका॥ स्वतवदियालयाका मर्य्यरुमवस्य थमनंशवख॥ ॥ नीलका
लागलालाकानिसचिस्यंखनयंजमरु॥ नाऊदंस स्वतगुज दाथडावि म्र
पनादिताका थतमदनचिस्यंनाऊवध पाधन आरुजिनिहाल साइइ
सदायकंनस्यनथंनयाय॥ १ साहालहाया म्रथसम्रुथंनमसम्रु
यावनस्यनथंजिनिहालधनन व नावमर्तं सवु सनसयथंवनशवख॥
निदिकइधनपकाया ववाठगाल थवु (मठ) ससिधनथंन वु (मल) स माह
निथंन लपठ सपादविय ममन सवंठाव म्रकी काइठव थन म्र थनि

पञ्जायाय॥ **संज्ञा**॥ संज्ञिकाद्रुसिकनयनकमास, थसिंधवनकचक, **मिथ्या**
वस्यशव **माहानिनीतवा**॥ ॥ सिकडछायाकावलसिर्यथवकाय, थसि
नलिदयक, वलानिवसिनयक, पातनलूथयावडायानामथंछानद्याय
मासुनशव॥ विखुदिउकापलका॥ मयाहा॥ धनयासांखिचायासांशु
नक॥ थनधूपयायमवनडवागयास॥ काकमंगलवहाकूट, गरुपिंपलि
डुडिनि, लवनचालसइइननयलिंगमपायर्हिगवाधलपयक॥ **॥ राजा**
लयापनस्यंजानिसतल, **संकाचहृव**॥ ॥ गालवमलववात्वनकमा

वामदयकजीव ॥ ॥ साइइसम्राहूदास्यं गाढानर्थं वनजवव ॥ ॥ स्त्रिवा
याइइडाअर्कहाडानस्यं पाकंदं चपसही इवव ॥ ॥ हाक्कापदस (गमना
वनवमनसिलव काषयापानवाय डायानामयायाव अत्रचिस (थक ड
वागनजयव ॥ वियाकपालसम्रूंजलरुयावथम्रूंजलनकवक मिमा
वस्ययायगा ॥ ॥ मवयापुलमाचकयापका आदितकामान्काप्रविगहि
दमलखंम्रुकाकपुलकुदरुकुदरुहंरुहंस्वाहानरुवियमवनडवागन
यायमरु ॥ ॥ कौववाअसानराजिनिसेवन नसन काससथंठनत्य

कनायना ॥ ॥ अट नीला मसद इत्त नक नक अति सा न स हिं ६४ ॥ ॥
ऊँ राया टप्यं राग न च्छु राग दय कं दा स्य त्व न कं हि नाय स न क अति सा न
स की ॥ स्वत अय ना दी त हा ली ख न न स्य त्व न कं राय न क अति सा न ना स ४
॥ कं स हा क हा रा गी ग ल सि हा ली प्र इ इ प्र । पाय ली ख स च क इ इ या रा ग
दय क त्व न क म ५ ५ ल स त्व न क की ॥ ॥ ५ ५ हा क स डी चो हो न ध न न
वा ल न क मा ग्व ला य स हिं ॥ वी स सा च न रं वा की न इ इ वा ना न कं क स
ति च्छु च न ना न हि व या की ॥ स्वत पाजा अय ना दि त हा नि न क ५ ५ हा ना

ऊरुं स थन लाहा त स वि स न ना ज मा रु न रु व ख ॥ ॥ वि ख न का पा व
हा सि क थी स वि या व म स दा य म स न इ इ म वि य क ॥ ॥ स रु प्र पा व
क उ का या क वा न या दा हा व न क या ल वा ज न क ॥ १ स ग ला स वा न या
हा व म स इ या व जा नि स पा न जा नि स का च रु य ॥ सा हा नि ग न का त
या व र्वा हा व न क हा या ला य ख ॥ १ अ ज य पा द म्बा च स इ थं हा व न
क प खाल दा य ॥ ला हा ख य ल रु न दि न या व स्या ल पा य ॥ ॥
१ अ मृ न रु द व मृ न स वा य रुं स हा ॥ ॥ का या म उ ॥ ॥ ग्री ख उ ड स

लषलकहाललखननस्यन्तनकगापसहीठ॥रूमनिस्थंधवमनीच
पिपनिष्टुठिडिलीहाकाजिनिथरुधलनवालावनकअग्रिमधुया॥वा
कर्वंधसुपविधि॥महानयासिकायावकिलीदयकपातनथमहात्रपा
झंझिथंठनलथराजनसलुथमनु॥झंझंरुअमकाकवाकर्वंधयता
दयमानयमयझंझंझंरुखाहा॥थलसडकिलननासतायमयन
ठावकाच॥वाकर्वंधनरुधरु॥॥अकषसमनु॥उडासजालजालावास
गाहाजालजालकाहाहिमाथवाहालासाकाहाझंरुखाहा॥॥थरुक

नवीनहा अर्कहा वदियालहा अलदहा चितकहा इधनहा समहा
गयाहावमग्व नायसही ॥ महाज्ञा समाक दधमनविधाधयाठनचक
नसखनतल ॥ ककुवयक ॥ रुठिम्बावया माउकायावदाधयाठावनक
ककुवयक ॥ १॥ रुठुयाजिसकलसंगकालावकुयडाहायायजिव ॥
रुनिधनयावक्रससिजलकासावकुयलहायव ॥ ॥ कमनियायातिन
पाधनमाननपगुगिकाविनजिव ॥ सतसासगुगुलकाथयलजगमसि
धूपयायसर्वदवपीति ॥ तावीसर्वसलावनपुलालवगलावसाखनधी

खलुलखलस्यमान ~~अजीर्णसः~~ ॥ ॥ लामलावकयाविधि वाथककक
कापदखसनामर्थः ॥ ~~समपित~~ ॥ ४ वदुपयावाकायाकघटसलथअथ
निचगागजनसतथमलिनवालानद्यायलयाकथसथमलुनजपलया
वलाडंजोंजोंजोंमकिजिवरुतममजानूकनपृषुपावर्त्तारुस्वाहा॥
ननापालायन॥ पाधनदधनसिंसर्थनखनागासदलासध पयाक
पुटिकाइयखा॥ ॥ आउससिनपाधलमाललपतिपातिपातिनकसक
तापुटिकाविनजिवखा॥ पतयायइइधनपनसितखालइइतकायससव

यका^पलमनवासक, डानलिनवयककवयक॥ ॥ गुरु॥ ॥
~~१०० नमामहादेववाय॥~~ वांवांवांवीनरुसैवालवतकककुंऊं पूरु मूदजी
षींजांयकिनादभूनरुतनिनदयुकिदमूकिदत्व॥ रुंरुंरुंसाहिधानलव
नयरुग(६) सिद्धिदवाममा(र्त)। जांजांऊंनेंकलाथाककककिविघूलवीन
रुडनमसु॥ ~~१०० नंदांवांरुंरुंरुं~~ ॥ रुंरुंरुंरुंसिततिवतजसूतज, धुकांगीह
सनाधरुमरुमरुमरुनिग, मनीयममूद॥ निघातघातइष्टानिपतिनवसूध
वक्राददसूद(६) सर्वसिस्ववूपरिउवननसितवाक्कीमागनमसु॥ जांजां

कीं वूं नमस्तुतव रुवरुव निरावरा वा विरावः ॥ निमूर्क मूर्कि मतव न वृष
गमन भामस्तुय्याग्निम (ध) ॥ ~~कीं कीं~~ लव सुश्च ॥ अप न पल प न ग्या न मा (र्न
प्रधान ॥ ति (हा) शि धू न म (लु) द न म्द न ल धी म रु धी न म स्तु ॥ श्रीं कीं वूं द मा नि
करु करु म खिल क कियाना न ना (ग) ॥ म्दा स ई ज ति धी धर्म क नू क नू स त त ति धी म
न गुरु गुरु ॥ त जा (प्र) सिद्धि ना (थ) म न प व न च ल व म्द प्र धान धा म श का क ना
हि म धा न्ध पि त प दान त र्ग क रु न म स्तु ॥ वां वां वूं वे प्र वी ल्व द रु न प ल ग त ला
मि व रु न व क ॥ ति स्का र्ग वा (हा) यू कीं दिन क न कि न लीं दी दि म मि प व ॥ ह स्का न का

[illegible]

[illegible]

गंगासिद्धि नमस्त्वगंगाविघ्निनाथ नमस्कृ॥ ॥ कृति मन्त्रमाह काविज
यसमाप्तः॥ ॥ ॥ श्री श्रीमन्नानन्दनाथ॥ ॥ पूजापञ्चायुक्तान्पूर्वादिप्रा
प्तान्त्रिपातज्ञानायपगवास॥ चत॥ श्रीर्वै॥ धूप॥ ऊजसका॥ दृष्टि॥ क
र्तुपणाकाश॥ ऊयकाकापुञ्ज॥ स्वानन्ताक॥ चरुमाध॥ यंचयता
काश॥ मृदुवानपातज्ञ॥ यथाकद्गुम्फ॥ समयश्चसंज्ञानथि॥ पूज
न॥ रुद्रसनाय॥ श्रीमृधानन्यास॥ श्रियाश्रुति॥ ॥ श्री श्री श्री श्रीमन्नानन्द
नाथः॥ श्रीमृधानावृणायनमः॥ वैकुण्ठी श्रीमृधानकीमृधानकीमृधा

[illegible]

थीथाई॥मधूमधुमतिरुतिनीस खीतनीयमाहानाथीई३रुद्रस्वाहा॥ॐन
मारुतिनीस्वनीगांझींझींखींही॥माहावनपुक्रमानाथीथाई३मधूमधुम
तिरुतिनीय॥खीतनीयमाहानाथीईरुद्रस्वाहा॥ ॥ॐनमस्तुतिनिश्च
नी॥गांझींझींखींईमाहावनपुक्रमानीयांई३मधूमधुमतिरुतिनीसखीत
नीयमाहानाथीईरुद्रस्वाहा॥**वल्लिविय**॥पूर्वमनुष्यत्रयरेववल्लिय
त्रयत्रयक्रमा॥मत्रयस्त्रयननीवासिनी॥सोम्यान्वेवदयकविसोम्यापास्त्र
य॥विष्णीरुगास्तथाचान्यादिगिरादस्तुतासर्वसूखीतनसपुतिगृह्णुमवल्लि॥

श्रीपतनपूरेनववलिगटक्र २ स्त्राहा ॥ ॥ श्रीतनीपूर्वमननयाग्निवलि ॥ य
कचित्पुन्यानिगित्पि ० जादु उजायागजां गरुजा संदा रुजा यकचित्पुन्यागि
नी ॥ द्रवनीरुववनी एमवनी उकादनी घदनी घदनी चरुप ३३ षट्सफन
वा दनी लीगियझसनिष्म यथपपनीनीममसिद्धि कर्वु रुद्रुद्र पतिगटक्र
मवलि ॥ श्रीपतनूपीनीयाग्निवलिगटक्र २ स्त्राहा ॥ ३ श्रीद्याननूपयश्रीहिमनान
चनिपूर्वमननवलि ॥ ॥ आख्याताममा (गप्रकतिनयामालिनिविद्दहा ॥
ॐ कारनकालमशुलावा नूदलमयायागिनिचक्रपविष्ठा ॥ श्रीनाथसंपग

मापवत्तमनिगनच्चिगारीममहिल्लंदर्वलाकमाताहिवसवनमूखामाः
हृष्टीनीथचक्र॥वलिगृफ्र२स्वाहा॥इंनमनगनवाथग्राभवाञ्जुष्ट्यामनि
धनी॥वाप्रीकृपकष्टदवासासाभमाहमधुस॥नानानूपधनास्थपिषट्ठा
विविधानिच॥तवसर्वपिरुष्टावलिगृफ्रुसर्वत॥~~वलिगृफ्र२स्वाहा॥~~ध
पदीपसंकल्प॥~~पतिष्ठा~~मधुस॥अप१नींनीं२०सांसींसूं२०३जोंजोंइं
२१३दव॥इंसं२१३दवि॥स्फा५॥तर्प्यन॥स्फा५॥लुंथनाघातमहावत्तानि
सिवनकिंविननामानिपू॥तच्चन्दगिनिइर्गमिवसिगृष्टीरीमदवध्वनं॥म

उर्गंधादि॥ विसर्जन॥ आहुस॥ समयकाय॥ ॥ रूति श्री मनामद
युनिसमाफ॥ ॥ लुरु॥ ॥ हुं नमरु नमनाय॥ आह्वचवव
॥ वारिहीयश्कानायश्कहवनीकात्रीकाङ्गागिनीमयचष्टिडङ्गा॥ नग
गनजुरुययीधयवामसानवामवद्धवा॥ ककिवादीभाजनलदाप्र
दनमासी॥ मानीअनिभाहिजीगदहीउपकाराकाभाहीमाया॥ नाहान
नागया॥ ३॥ गभनिनरुतय॥ ॥ माहिनकाकनदि॥ कारीकामायका॥ नता
यीप्रीधनापयिन्वदनमजनपदननी स्वापडवमनाहीनकाकनारु

नमस्तुतावभाहीसंगनामा॥ हारागवरुनिमस्तुतावभाहीसंगनामा॥

[illegible]

ईगनावयिधीगवनाषसचागववयिदैयेमकूनीसावनगुच्याप्रितस्का
साथविद्युतनिनासाथवम्रमापिचतिपाधधननीककृविनासीप्रतिनिन
गनपागमा३पिकरुनमरुकावीनकासद्धिधनविलूतिऊपयख७खंड
दैगवया॥ ॥समाफळीमनु॥ ॥ ॥ ॥समाफपूक॥ ॥
१नयालाद्यगाससुतवदमरुवसूक्त॥ ॥रुनु॥ ॥कषपदेव॥ ॥नमा
वा॥ ॥शुकेवासय॥ ॥लिखितंलक्ष्मिर्निरुनमरुलस्यवपूक्त॥ ॥यदिशुद्ध
मसद्धंवा॥ ॥ममदाषानदीयत॥ ॥ ॥गुरु॥ ॥ ॥श्री३रवालीसूपीतिननु॥

यश्च

१ सम्भृत ८७४ वेद्युदि चतुर्दशी कद्रु श्री ३ वा नाही रुवाही, कु बीस
कला विश्वातका वगया व नम, खलुला व, सिंघासन नन कानन वला
श्रया भक्ति, त्वस्ति भक्तियादा, खलुसं, कुसं ॥ श्री श्री जय नलजी नम
स्रयव, शशया, त्वस्ति भक्तियाक, खलुसं, कुसं ॥ ॥ ॥

१ थ सारूल, नन रुविया काय, ~~नन दयका वाग्या~~, विजक कुया, ल
आसिं रुन वाया व विया रुना ॥ कस्तुन वाया व नया, जलन प्रनिया लयाय
मान, ~~नन रुला याय मतव~~ ॥ ॥ ॥ स्व आसनः

उपसि विष्य ॥ ॥ रुनवाग्नि रुद्रानि कायमूर्कस्थायथासाक्षीकरुल्युदा
यत्तारुर्वंशु ॥ शुभमस्तु सर्वजगद्गुरुवक्ति शुभ दाशानियलजाति सानि सर्व
७४ सर्वज्ञसुखात्तारुर्वंशु ॥ ~~गवाक्र (दाश ७४) शुभं रुद्र ७४~~ ॥ नाजाधमवि
जलमु ७४ युजा सुखी नासनकु ७४ ॥ सर्व सत्ता सुखा नासनं ७४ दधु रु
दया ७४ ॥ यथैक काल वरियमस्तु ॥ दियध वदुय दानां सानि रुद्रकु
~~यति रुद्र ७४~~ ॥ देवावर्ष ७४ काल जनयति वसुध सस्यमम्यु शुभाग्र ॥
कौलाध्यासदृग्मवनयनवियुजमति या ७४ नाजाधनाति सुखी नासा
धूयुगी कल रुति जना जाति दाया विता ७४ ॥ साका नां रुकि रावाय

रुद्रविर्युते रुद्रि संख्यायुता सु ॥ ॥ अस्मन्नाजाधिपति श्रीं
जय नमो जी नमस्तु नमो दत्तवत्प्रसिद्धि नमः ॥ ऊऊमानिना अवनः
सिन्दू संमानवृद्धि नमः ॥ जयमानस्य सगनस्य निवा नाक्षं आयुना
ग्य मे व्यर्थ जनधनल श्री सकृति सन्ना नवृद्धि नमः ॥ संतं संतं नितं
गं युद्ध निना विस्तृया यादया नाना नय निया लनि वसूध धर्माधि
ना सवदा ॥ कालसन निवृष्टि ना काल मन्त्र ४ स दुय दामादि ना ॥ भा
दस्ता धनवृद्धि ना धूव युद्ध (गति युभादा सदा ॥ स्वस्ति यज्ञा नां यः

[illegible]

यय हावान्नाधिर्कं ममु कयाधलस ॥ कमखदवा मनसावा
या गता न्यायदित्रकमात । अक न वाकहि न न नुयूल हा नास
नं ॥ मनुहि नं क्रियाहि नं रुकि ही नं नथे वन ॥ जय हा माभ्य न्यः
हि नं **कम्य नां यन मभ्य नी ॥ ॥ ॥** **जय कि दया द न वा दः**
यंक ऊं य सन्न वा मा मृ न मा कदाय कं । अनक सिद्धा तम नित्य वाधं
न मा मिवा पू कया गिनि गधी ॥ या गिनी वकु मध्व स्रं मा रु म धु
लव धि नं ॥ न मा मि गिन शा ना थं रे न व रे न वी थिय ॥ अय दा इः

निताताय ४ समयावातलंयनात् ॥ सर्वानमद्यारुहुदियवक
स्यमेलनात् ॥ संयूज्जकार्तायनियानिकातां जितन्दयागीन्द्रनयाध
नानां ॥ दमस्यनायुस्यकसस्यनाय्वा कत्राहुम्भर्किरुगवान्कूलः
४४ ॥ ~~जामागमयराव~~ संस्किताहुवनययं । नमस्काय ४ नमस्का
यागिनिश्चानिजकर्त॥ नन्दनुसाधककूलाकनिमानिसिद्धासा
यारुवन्नुसमयद्विषयागिनीतां ॥ ~~साधकयसूत्रनुकामधिकय~~
वस्त्रयस्यायुनाय्यत्रक्षयंकजमनदेवं ॥ नन्दनुसाधकासिद्धा

[illegible]

साङ्गकनियस्यस्मन् (६) नैवन्देहं नवनाथं ॥ १ ॥ ~~विरुदिसिक्कदह~~
सैविकुम्भककुम्भकनैविसग्ननारिनिम्नगभुवननाडिसङ्गनाग
मस्त्रिआलक ४ मासवासावन्द (७) नैवन्देहं नवनाथं ॥ २ ॥ ~~विरुदिसिक्कदह~~
रुनवन्देहं ॥ २ ॥ विलोक्य ३४ समस्त्रिनाव नाव नदिवाकस ४
ययीयनैह नारुनैजयायनिर्मलं ३४ ॥ विषंरुहालक ० यवदः
वयायिनवहं रुकुकुङ्ग गरुह रुहागरुह रुनवन्देहं ॥ ३ ॥ य
नायनकसकसाकसाक (८) कखधुनं ~~युनन्दलारुमांगयुधन~~

[illegible]

निरुच्यरुनिरुच्यसंयुतं यमरुतयुतनाद्यसत्तिमाचसवि
तं। अन्कयागिनीकयालमालहेनवध्वनं रुकुकुङ्ग गरुलुला
गरुलुल नवध्वनं ॥ १ ॥ युनयुतचवा दूदधुखधुखधुकात्र
कं महाविशमूलरुसुवेनवीनकात्रकं। मृगानिचमृगानुवमृ
यूद्धकर्मदूहेनं रुकुकुङ्ग गरुलुला गरुलुल नवध्वनं ॥ २ ॥
समरुस्यन्वासनासुवासनाहिदायकं नथरुनाजिनलत्रा
जिनलत्राहिदायकं। यलासकाधदरुष्ययूजितं गुणकनं ॥ ३ ॥

[illegible]

कनूरुवरं विनिश्चिन्नचित्रयतिसाकानविकलम॥ ~~वदन्तं~~
त्रि० केथमयिसदमुनसिनसा रुत्र० संकृतेनंरुऊतिरुसिनाइस
~~नविधि~~॥ ३ ॥ अविद्यानामकस्मिन्नमिदिद्वीयनगगीऊऊनांचेत
असुवकमकनचयुतिमित्रादत्रिडाक्षीचिकामसिगुधनिकाऊ
अऊरु॥ ५॥ निमग्ननांदं द्रुमूत्रनियुवनारुस्यरुवती॥ ४॥ त्वद
च० याविश्यामरुयवत्रदादेवतगधस्त्रमकातेवासियकटित
~~वनाली~~ ~~रुयनया~~॥ रुयाऊरुं दाउरुसमयिववां द्रुममधिक् ॥ ४॥

नक्षत्राणां कवहिरुचनधववतियुधो ॥ ५ ॥ ~~रुचनधववतियुधो~~
ऊनसौराग्यऊननीयूनातानीरुत्वायूत्रनियुमयिको रुमनयगु। स्म
नायि त्वानत्वा न निनयनलक्षननयूषा मूनीनामयानक ४ यरुवतिः
~~हिमादायमहनां~~ ॥ ६ ॥ धनु ४ यो यो मो वी मधूकनमयीयंतविमिखा
४ वसक ४ सामनीमसयव नूदायाधतनध ४ ॥ नथयक ४ सचिह
मगिनिसूतकामयिकया मयांगरुलद्वाऊगदिदमनं (ग) विऊय
न ॥ ७ ॥ कदाकाशदा माकनिकलरुकुमुनरुनायनीक्षीधम

५- ~~अथ निघात म न व द द द ता । ध न् द्वा द्वा न्या मी गृ णि म यि द ध्वा ना क~~
न न ले ४ यू न स्मा दा स्मा न्न ४ यू न म यि तु ना हा यू न् यि का ॥ ८ ॥ सू ध्वा
सि ध्वा म्मे ध्वा सू न वि ट यि वा टी य नि वृ त् म वि द्वा य नी या य व न य ति
वि का म वि गृ ह् ॥ मि वा का न म ध्वा य न म मि व य र्य ङ्ग नि ल यो र्ग
नि ल्या ध न्या ४ क टि क टि वि दा न न्द ल रु नी ॥ ध्वा नं ॥ म हिं मू ला ध्वा नः
क म यि म वि यू न दू न व र्दं स्त्रि नं स्त्रा धि स्त्रा न द्वा दि म नू त का मा ग म्
य नि ॥ म ना यि यू म ध्वा म क ल म यि डि ल्या कू ल य र्थं ~~स द्वा न य द्वा~~

सहनरुसि यस्या विहनसि ॥ १० ॥ सुधाधना सा नैश्वर्यनक्षत्रगता न
विगति ॥ ४ ॥ ययैर्वैसि ॥ ३ ॥ कोयून नयि न सा म्नाय मरुसा । ~~मया यस्या~~
रुमिंडुजगति रुमध्वरुवलर्यं स्वमात्मानं कला स्वयिषिकूल कं
उकुरुनिहि ॥ ११ ॥ वधुरि ॥ ४ ॥ श्रीक ॥ ४ ॥ मिदयुवति रि ॥ ४ ॥ यं वरि न
ध ॥ ४ ॥ यरि न्ना रि ॥ ४ ॥ गं र्ग नैव रि नयि मूल य कति रि ॥ ४ ॥ गयश्च त्या नि
गद सुदल कला कु विवल य वि नखा रि ॥ ४ ॥ सा द्वं तव च नल का द ॥ ४ ॥
~~यनि द ॥ ४ ॥~~ ॥ १२ ॥ स्वदीर्यं मोद र्यं दुहिन गिनि कच्य तुल्यि तुं क

वीन्दा ४ कस्यक कथा मयि विनिश्चिय रु नय ४। यदा तो का त्सु याः
दमन नल लना या कि म न सा न या हि दु ४ या या म यि मि नि गी सा
यूक्त यदवी ॥ १३ ॥ न न वधी याँ सं न य न वि न सं न म्म सू ऊ उँ, न
वा याँ गी ली क य ति न म नू धा व कि स न स ४। ग ल द्ध वी व धा ४ कू
व क ल ग वि ग सु मि व या, रु ०। शु द्ध का ५५ वि ग लि न दू कू सा य
व न य ४ ॥ १४ ॥ कि नो म र्द्य वा ग दि ग म धि क यं वा ग दू द क, दू ना ल
द्वा ष षि शु न धि क यं वा ग द नि स ॥ दि वि दि ४ ष दि ग न्म न मि

यवतु ४ षष्ठि त्रितिय मयूषा सुषा मयूष त्रितय यादाम्पुङ्गुयुगं ॥
१५ ॥ गन क्त्वात्ता गुर्गं गनियुत ऊढा कृत मूकतां वन गण गण
सुटिक गुटिका यूसुक कर्न ॥ सद्धन त्वांत त्वा कथमवसर्तां स
न्निदधत् मधुकी नडा कामधूनि मधुनी नारु विनय ४ ॥ १६ ॥ के
वीन्द्रा धर्मयत ४ कमसव नवा सातय नूविं रुडं कयसक ४ कति
विद नूष्म मव रुवती ॥ विनिवि क्रिय यस्या सुनल गृग्न न सह
गी गरी नारी वीरि विदधनि सह न ऊन ममी ॥ १७ ॥ सविणी

रिर्वावां गनिमलिमिलारुं गिनुचिरिर्वासिन्ध्यामारिह्रीसहज
ननिर्संचिकयनियः॥ सकर्त्तकाद्यानोरुवतिमहतांरुं गि शु
रु (गे. वी. री. रि. र्वा. (य. वी. व. द. न. क. म. ला. भा. द. म. ध. नै. ॥ १८ ॥ त
नूद्धाया रि. स्त. नू. न. त. न. धिं. श्री. स. न. धि. रि. दि. वं. से. वा. मू. वी. म. नू.
न. म. धिं. म. ग्ग. म. स्म. न. नियः॥ रु. व. ल्य. स्य. उ. स्य. नू. व. न. ह. नि. द. सा. ली.
न. न. य. ना. ॥ स. हा. व. ॥ व. ॥ क. टि. क. टि. न. गी. र्वा. न. ग. धि. का. ॥ १९ ॥
मू. र्वा. वि. न्द. क. ली. कू. च. यू. ग. म. ध. रु. स्य. त. द. (ध. रु. का. ना. द्व. ध. य. द. न.

महिषि तम नमः कलाम् ॥ सस्य ४ संक्रा रं नयति वनिता नामिः
यमिलय गिला की मया शुभमयति न विन्दुस्तनयुर्गं ॥ २० ॥ कि
नकी मंगल ४ कि नमनि कू नू म्या मृ न न सां द्वादित्ता मा धरु हिम
क न गि न न गि मू लि मि व य ४ ॥ समर्थो धर्म दर्थ समयति ग कू ना
धिय ०० न क न पू र्ण द द्वा सूखयति सू धा सा न सदृश ॥ २१ ॥ न डि
सूखान स्वतिय न ग मि वे श्व न न मयी निष धूर्म धु मयू य निः
कमला ना नव कमला ॥ महाय द्वा न द्या मृ दि न मल माय न म

न सा. यत्नः ॥ ४ ॥ यत्नः ॥ यत्नः ॥ यत्नः ॥ ॥ २२ ॥ रुवा
नित्वा दा स मयि वि त न द धिं स क क्ष. नि ति स्मा रु वां च्छु च्छ थ म ति
रु वा नि च्छ मि ति य ४। त द व लं त स्मे दि षा सि नि ऊ सा यू च्छ प दः
वीं मू कू च्छ व क्क न्द स्र न नू कू त नी ना जि त य दां ॥ २३ ॥ स्वया
द ल्वा वा मं व यू न य नि रु च्छ न म न सा. षा नी न द्ध मं ला न य न म
यि धी कं द न म च्छ न ॥ त द त ल्वा दू य स क ल म नू ना रुं वि न य नं
कू वा स्या मा न मं कू टि ल षा मि वू ठा ल मू कू टं ॥ २४ ॥ ऊ ग स्मू तः

धमगारुनि नवति नूद ४ कयय न ति न सु च न त्स मयित य
नी मस्ति नय न ॥ सदा पूर्व सर्व सु दि द म नू गृ क्रो ति व मि व
स्व दा डा मा स म्य क ष व नि न या रू ल ति क यी ४ ॥ २५ ॥ **पु या नी**
द वा धर्मा ति न य ऊ नि ता ता म यि मि व रु व लू डा यू जा न व व न
ष या या ति न वि ता । न थ यि त्त त्या दा द रु न म मि यी ० स्य नि
क ट् स्ति ता ऊ न स व न्मू क् ति न क सार्क स मू क् टा ॥ २६ ॥ वि
नि स्त्रि ४ यं व ल्यं व ऊ ति रु नि ना प्रा ति वि न तिं वि ना र्ग की ना

~~अथ द्वितीयं निधनं~~ ~~आयाति निधनं~~ विरुद्धी माहृद्धी विरुद्धी न
यि संमीरुति दृष्टं महासंसात्र स्मिन्निह नति सति च त्वति
न सो ॥ २१ ॥ ऊर्ध्वोक्तस्य ४ गिर्यसक समयि मूढा विवचनं ग
ति ४ यादद क्रिष्टं कुमनद नाद्या दूति विविधि ४ युष्म म ४ सं वे
४ ४ सुख मखि लमात्मा यो दद ४ सय ययि ययि स्रु वरु वरु
य न्म विरुद्धि न ॥ २२ ॥ सुख मया स्वायुति रुय ऊ नामृष्ट
~~हृत्तवी~~ विवचनं विरुद्ध विविध सत मखाद्या दिविषद ४

कनालयत्कदकवलितवन४ कालकलनानसं रुसुन्मूलं ऊ
नितवताटकेमहिमा४॥२२॥ ददानदीनस्य४ प्रियमनिगमीगम न
~~सदृशी~~ ममन्दसोच्योस्तुव कमकनन्दं विविनति॥ तवास्मिन्म
न्दा नस्तुवकसूरु (गया) पुत्र (ध) ~~निगमनदीनस्य४ प्रियमनिगमीगम न~~ (ध)४ व
दनवर्गा॥ किनीटं वे त्रिं त्रम्य त्रिह नयूत४ केट रुहिद४ क (०५)
त्रकोटी नस्य ससिऊ हि ऊं रु निमूकूगं। यद्यम स्रुतं यूसु सुरुमः
रिया न स्य रुवनं ~~रु नस्यायून्म~~ ~~ननवयनिऊना~~ किर्त्ति जयत ॥

३०॥ ~~वैकुण्ठाय नमः ४ सकलमपि सर्वं यदुत्तरी~~ स्थितं सुरुक्षिद्धि
यस्य तत्र तत्र तु ४ यद्युपति ४ यूनस्तत्रिर्विश्वदशिवलयूत्रुषा
र्च्यकथ्यते नै. स्वतन्त्रं तत्र तन्त्रं किति तत्र समवाती तत्र मिदं ॥ ३१ ॥ मि
त्र ४ नाकि ४ काम ४ किति तत्र वि ४ भीत कत्र ४ स्म ग्राहं स ४ म
कुरु दन्त्रयना मात्र दन्त्रय ४ श्रीदक्षिणारिः सुरुक्षि तत्र वस
नम्रुद्यति ता. रुद्रकवर्धुना तत्र जननिना मात्रयवर्ता ॥ ३२ ॥
स्म त्रयानिंत् श्रीं रुद्रयमिदमादीतत्र मनानिर्विश्वयैकनित्यनि

नवविमला रागजसिका ॥ अयन्निर्वाचिनामविगुहनिवद्धा
कवत्तयागिवा (यो रुक्म ४ सूत्ररिष्टु नक्षत्रादुत्तिसने ४ ॥ ३३
॥ गत्रीनल्लंभी ४ गमिमिदिनवक्रान्द्रुयुगं नवात्मानं वन्दरु
गवतिनवात्मानमनय ॥ अत ४ (मम ४ (ममीकयमूरुयसाध्व
जलयगा. स्मि ४ सर्वं (धवां समजस्यनानन्दयदया ४ ॥ ३४ ॥
मनस्त्वयामस्त्वमनूदसिमदत्सानयिनसि. स्वमायस्त्वं रुमिः
स्त्वयियनिनतायानदियनं। स्वमवस्वात्मा नयनिनमायुवि

~~मन्त्रयुग्मा~~ विद्वानन्दाकारं गितं यत्नं विवृणोति ॥ ३७ ॥
॥ तत्रास्ति च कस्यैतन्मयं नमो गितं काटि श्रुति धर्मं यत्नं मूर्धु वंदय
त्रिमितितया श्रुति यत्रि विदा ॥ यमा नादं रुक्मा न विममि शुची
नाम विषयं निना ला क सा क निवसति हि रुसा कडु वन ॥ ३८ ॥
॥ विभुजो न गुह्यं स्रुति क विमदं यामजनकं गितं स वंदवो
मयि गितं स मान यत्र गितं । यथा ४ का त्या या ह्या गमि कि न द
~~सा नूय गन वि~~ विधूता न द्वा का वि स्रुति व का नी व ऊ ग नी

॥३१॥ समून्मीतत्संविक्तमसमकनन्देकनसिर्कं रुऊदंसदं
किमपि रुतामातवैसंनं ॥ यदाहायादष्टादशगुणितविद्याय
त्रिदतिर्यदादसुदाष्टादशमसिखसमह्य ४ ययव्व ॥३२॥ तदि
दकं गच्छाति मित्रयत्रियकिस्त्रुनतया स्त्रुनत्रातात्रत्ता रुत्रघ
यत्रिघन्युत्रमूर्य ॥ तव आर्ममर्थं कमपि मविषूत्रे कनत्रधं
निषववर्षकं रुनमिहिननयं विदुवर्नं ॥३३॥ तव स्वाधि स्त्रा
नद्रुनवद्रुम विष्टाय नित्रनं तमीदर्थं वरुं ऊननिमहर्ता नां व

समयां॥ यदा सा कला का न्दहति महति काश्च कहिस्त्त वा
 द्याष्टि ४ मित्र मूयता र्वेन त्रयति ॥ ४० ॥ तवाधाम मूल स
 ह समयया लासाय प्रया, नवात्मा ते वन्दे नव जग महा ता न्द व
 नेन ॥ इहा सा भिता सा मूरुय मयि निदिष्ट दयया सुना धाः
 स्त्री ऊरू ऊन केऊन तीम ऊ गदि दं ॥ ॥ ॐ ति आनन्द सु रु
 नी सा उपमाय ४ ॥ ॥ ॥ २५ नमः श्री रु ग वा न्ये ४ ॥ ॥
 न ना ना न मा ना न वेध न दा ता न यू गा न यू जी न रु था न रु र्ही

न जाना न विदुः न वृत्ति म म म गति स्वं गति स्वं नाम कारु वा नी ॥
॥ न जाना मि दानं न व श्वा य मानं न जाना मि म नु न व स्का णु ऊं
ऊं न जाना मि यू जान व च्या स जा गं गति स्वं गति स्वं च म कारु वा
नी ॥ २ ॥ रु वा द्वा न या न महा द् ४ ख ही नो य यी त ४ य का मी य
रा रा य म रु ४। क मा या क न रु ४ य व द्वा स दा हं गति स्वं गति स्वं
च म कारु वा नी ॥ ३ ॥ न जाना मि यू र्ध्वं न जाना मि मी र्थं न जाना
मि मू र्क्षा स य म्वा कि म त न् न जाना मि रु कि बु नं वा यि मा न् ग

क न मा

निर्लसंगतिस्त्वं स्वमेकारुवासी ॥ ४ ॥ य ऊ र्गं त्र म र्गं म ह र्गं सु त्र र्गं
ग (ह) र्गं दि ने र्गं नि (ह) र्गं व त्र म्वा । न ज्ञा ता मि वा न्यं स दा हं स त्रं
ह्यं ग ति स्त्वं ग ति स्त्वं स्व मे कारु वा सी ॥ ५ ॥ कू क र्मी कू स र्जी कू व
द्वि कू दा स, कू ला वा न ही कू ला वा स सी तं । कू द द्धि कू वा र्कं स
दा हं रु वा सी, ग ति स्त्वं ग ति स्त्वं स्व मे र्गं को वा सी ॥ ६ ॥ वि वा द वि
सा द यु मा द यु वा स, ऊ र्ग वा न त्र य च्चे त म र्ग म (ह) । ~~न (ह)~~
स त्र (ह) स दा मां य वा हि ग ति स्त्वं ग ति स्त्वं स्व मे कारु वा सी ॥ ७ ॥

२क लवग द्य ड व झु ग ख ट

अना (ध) द त्रि द्वा क ल्वा वा ग य् को म ह्वा क्ती न दी न ४ स दा आ च्यः
व कु ४। वि य र्हि ४ प्र वि ष् स दा हं रु दा नी ग ति स्त्वं ग ति स्त्वं त्व
~~म ज्जा र्ज्जानी ॥ ६ ॥~~ ॥ न्ति ष्ठी र्गं का वा यो वि चि तं रु दा न्धा
ख कं म मा य ४ ॥ ॥

सूक्तं समाप्तम् ॥ ॥
अनवतिष्ठतु ननु विष्णोः शान्तं नायकैर्द्विदत्तामह
न सत्यं ननु नाके मं माह देवमाकाशं कर्दंगशा
न सत्यं किंचित् न मरुदिनां निना गिनन्तो यैः मेरुमा

सुनताव दत्तना लवि वा नाना य म धन दत्त
याताव दत्तना लवि वा नाना य म धन दत्त
मादव सुदका य रुक दत्त गका ॥८॥

य म धन

कन धन ललक यग दत्त रुका यग मा न न व ना धन

५

१ कन मणि वा यन मा वा ग दत्त मा य ॥